अखिल सेतु

समन्वयवाणी नूतनवर्ष संस्करण

प्रकाशन वर्ष जनवरी **2023**

प्रधान सम्पादक एवं प्रवर्तक :- आदरणीय डॉ. अखिल जी बंसल जर्नलिस्ट

उपप्रधान सम्पादक :- किशनलाल जांगिड़

सहसम्पादक :- श्रीमती शोभा टण्डन

सहयोगी:- डॉ.इन्दु जी जैन विदुषी कवयित्री रत्न, श्रीराजेन्द्र गुलेच्छा 'राज',

श्रीवेदप्रकाशसिंह 'प्रकाश', श्रीराजेश पाठक 'प्रवीण' ,श्री भूराराम सुथार

अनुक्रमणिका

क्र.सं	स्तम्भ विरण	विचारक एवं चिंतक व्यक्तित्व	पृष्ठ संख्या
१	सम्पादकीय	डॉ. अखिल जी बंसल जर्नलिस्ट	०४ से ०६
२	बालक सुरेन्द्र से आचार्य विद्यानन्द- एक सफल यात्रा	डॉ. अखिल जी बंसल जर्नलिस्ट	०७ से १०
३	नये वर्ष की नव बेला,नीड़ का पंछी	डॉ. अखिल जी बंसल जर्नलिस्ट	११
३	कहानी शान्त हवा	सीमा गर्ग मंजरी	१२ से१४
४	लघु कहानी - पाँच सौ का नोट , लॉकडाउन	प्रोफेसर अरुण कुमार गौड़	१५ से १६
५	सर्वधर्म सद्भाव	प्रार्थना - राजेन्द्र जैन रतन	१७
		प्रकाश पर्व - किशनलाल जांगिड़	१८ से १९
६	समाज में नारी का महत्व एवं स्थान	प्रो.डॉ. शरद नारायण खरे प्राचार्य	२०
७	स्त्री मन में रिश्तों के बीच भय कारण	सीमा गर्ग मंजरी	२१ से २४
८	चित्राधारित सृजन	आँगन की है शान चिरैया सुशील चन्द्र पाण्डेय	२५
९	रंग बिरंगी प्यारी चिड़िया	वेदप्रकाशसिंह 'प्रकाश'	२६
१०	प्रेम की धुन सजाऊँ कैसे	आनन्द नारायण पाठक 'अभिनव'	२६
११	वाह ! सर्कस एक समय था	किशनलाल जांगिड़	२७
१२	जिन्दगी तीन घण्टे का सर्कस है	डॉ. आलोक रंजन कुमार	२८
१३	शृंगार ऐसा करौ कान्हा	डॉ. विनोद गहलोत जोधपुर	२८
१४	प्रेम गीत है प्रेम संगीत है	रामप्रकाश अवस्थी 'रूह'	२९
१५	हार नहीं मानूँगा अटल जी	स्वाति जैसलमेरिया 'सरु'	२९
१६	भारत रत्न अटल जी पर दोहे	प्रो.डॉ. शरद नारायण खरे	३०
१७	प्रभु परम विलक्षण प्रेम प्रतिमूर्ति	किशनलाल जांगिड	३०
१८	माँ की दुआएँ	किशनलाल जांगिड	३०
१९	माँ केवल माँ	बृन्दावनराय सरल 'सागर'	३०
२०	मत रो माँ	जितेन्द्र मिश्र 'यायावर'	३१
२१	एक बालक की माँ के लिए भावना	ऊषा जैन 'उर्वशी'	३१
२२	नया दिन	'राम' सुथार जोधपुर प्रोफेसर	३२
२३	देखो सुन्दर स्वर्णिम वेला	पदमा तिवारी 'दमोह'	३२
२४	नई सुबह 'निर्झर'	कुंजी लाल चक्रवती 'निर्झर'	३३
२५	नूतन वर्षाभिनन्दन	प्रो.डॉ. शरद नारायण खरे प्राचार्य	३३
२६	गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस	रश्मि पाण्डेय शुभि डिंडोरी	३४
२७	वक्त से टकरा रहा हूँ	महाकवि लोकेशकुमार सिंह 'साहिल'	३५
२८	नव कोपल नव पर्ण	रामप्रकाश अवस्थी 'रूह'	३६
२९	हिन्दी दिवस गीत	रामप्रकाश अवस्थी 'रूह'	३६
३०	राधा- श्याम प्रेम दोहे	राजश्री राठी कवयित्री रत्न	३७
३१	मोह छोड़ने जड्यौ कान्हा	चौधरी आशा 'निर्मल' जैन	३७
३२	कृष्ण की जादुई मनोहारी छवि	हिमांशु जैन 'मीत'	३८
३३	राधाकृष्ण की बड़ी सुन्दर छवि	सौ. सुमित्रा मून्धड़ा	३८

क्र.सं	स्तम्भ विरण	विचारक एवं चिंतक व्यक्तित्व	पृष्ठ संख्या
३४	श्याम प्रेम श्रीराधे	शमा जैन सिंघल जोरहार	३९
३५	अलौकिक प्रीत	श्रीमती नितिन शर्मा 'नीति'	३९
३६	राधाकृष्ण की अमर प्रीति	प्रो.डॉ. शरद नारायण खरे	४०
३७	ओ पिया रंगरेज	'स्नेहदिल' नरेश चावला	४०
३८	कृष्ण कब आओगे	मधु वैष्णव 'मान्या'	४१
३९	घर की चौखट	स्वाति मानधना 'सुहासिनी' बालोतरा	४१
४०	अखिल सेतु आह्वान गीत	वेदप्रकशसिंह 'प्रकाश'	४२
४१	मत्तगयन्द सवैया	सुशील चन्द्र पाण्डेय	४३
४२	हे कृष्णा	स्वाति जैसलमेरिया 'सरु'	४३
४३	स्वस्थ जीवन आधार शाकाहार	मालिनी त्रिवेदी 'पाठक '	४४
४४	स्वस्थ जीवन आधार शाकाहार दोहे	जितेन्द्र मिश्र 'यायावर'	४४
४५	शाकाहार तुम अपनाओ	राजेन्द्र जैन रतन	४५
४६	शाकाहारी बने	कुंजी लाल चक्रवती 'निर्झर'	४५
४७	जीवन आनन्द	संजय जैन 'बीना' मुंबई	४६
४८	पालो नहीं निराशा मन में	चन्द्रकला दुबे डिंडोरी	४६
४९	साँज का दीप हूँ मैं	किशनलाल जांगिड	४७
५०	नयी सुबह सन्देश	किशनलाल जांगिड	४७
५१	सावन	'राम' सुथार जोधपुर प्रोफेसर	४८
५२	आम्र तरुओं में नव पात	शीलचन्द्र जैन 'शील'	४८
५३	अधरो पर मुस्कान खिली	प्रमोद दाहिया 'गुरुदेव'	४९
५४	तुम आ गए हो पास	शोभा टण्डन	४९
५५	विश्व पर्यटन दिवस	शमा जैन सिंघल	५०
५६	आदमी को पढ़लो अगर	शोभा टण्डन	५१
५७	तिरंगा	सीमा गर्ग 'मंजरी '	५१
५८	राष्ट्रीय पर्व पन्द्रह अगस्त	किशनलाल जांगिड	५२
५९	परमार्थ	'राम' सुथार जोधपुर प्रोफेसर	५३
६०	मुझे वो हिन्दुस्तान चाहिए	ज्ञाता सिंघाई 'सिवनी '	५४
६१	भारतीय संस्कृति अद्भुत	डॉ. सूरज माहेश्वरी	५४
६२	कह रहे श्रीकृष्ण अपनी राधा से	शोभा टण्डन	५५
६३	हरिवंश राय 'बच्चन 'काव्यधारा	श्रीमती प्रभा लोढा	५६से ५७
६४	दुष्यन्त कुमार 'परदेशी '	विभा जैन 'ओज्स'	५८से६१
६५	भारतीय संस्कृति	सत्यनारायण तिवारी 'सत्य'	६२
६६	महादेवी वर्मा जीवन परिचय	प्रो.डॉ.मंजरी 'गुरु'	६३से ६८
६७	गोस्वामी तुलसीदास जी काव्य पक्ष	रामप्रकाश अवस्थी 'रूह'	६९
६८	आभार अभिनन्दन कविता	किशनलाल जांगिड	७०
६९	सम्मान सम्मेलन की झलकियाँ		७१से ७८
७०	आभार धन्यवाद	सहसम्पादक- शोभा टण्डन	७९

नये वर्ष में आओ नया करें : नजर बदलकर नजारे बदलें*

-जर्नलिस्ट डा.अखिल बंसल, जयपुर

भुला दो बीता हुआ कल।
दिल में बसालो आने वाला कल ।
परिस्थितियां कैसी भी विपरीत हों।
हंसो और हंसाते रहो प्रतिपल।
निश्चित ही खुशियां लेकर।
आएगा आने वाला कल।।

समय चक्र बहुत तेजी के साथ घूम रहा है। समय के साथ हमारी परंपराएं, हमारी रीति नीति, हमारे रीति रिवाज, हमारी धारणाएं, हमारा रहन-सहन सभी में आमूलचूल परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है । हमारे पूर्वज धवल वस्त्रों में धोती कुर्ता और सिर पर टोपी या पगड़ी पहने दिखाई देते थे। फिर कुर्ते पजामे का चलन हुआ और अब जींस टीशर्ट का प्रचलन है । सिर पर पगड़ी टोपी सब गायब हैं। स्त्रियों के पहनावे व रहन-सहन में भी स्पष्ट परिवर्तन दिखाई दे रहा है। नई पीढ़ी की बहू बेटियां साड़ी नहीं अपितु टाइट जींस और कुर्ती में दिखाई देने लगी हैं। बच्चे भी अब खिलौनों से नहीं मोबाइल से प्यार करते हैं । खान-पान में भी सत्तू मन भत्तू नहीं बच्चों को मैगी चाहिए । कहने का तात्पर्य है सब कुछ समय के साथ बदल रहा है।

बदलते हुए इस युग में नई पीढ़ी धर्म से विमुख होती जा रही है । उसकी नजर में धर्म करना माता-पिता का काम है । आज कंप्यूटर का युग है ; आज के बच्चे बचपन से ही कंप्यूटर में इतने मशगूल रहते हैं कि वे धार्मिक क्रिया-कलापों से कोसों दूर हो डीजे पर थिरकने में शान समझते हैं । जो महिलाएं पहले घर की देरी से बाहर नहीं निकलती थीं वे अब आसमान में उड़ रही हैं; हवाई जहाज उड़ा रही हैं। सेना में शीर्ष तक पहुंच चुकी हैं।ऐसी कोई जगह नहीं जहां महिलाओं का दखल ना हो।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति आज शांत और हताश दिखाई दे रहा है। कमाई खूब बढ़ गई है, आमोद प्रमोद के साधनों की भी कोई कमी नहीं है; फिर भी जीवन दूभर सा लगता है । जीवन जीना भी एक कला है इस कला से युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है । यदि कामयाबी पाना है तो जीवन जीने की कला सीखना आवश्यक है । प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का समावेश रहता है। अनुकूलता में हम खुश और प्रतिकूलता में हम दुखी हो जाते हैं । जबकि दिन-रात, अंधकार- प्रकाश, प्रतिकूलता -अनुकूलता, सुख-दुख यह सभी जीवन के अनिवार्य अंग हैं और प्रत्येक के जीवन में क्रमशः आते जाते रहते हैं। जीवन की सभी परिस्थितियों में व्यक्ति को धैर्य रखना चाहिए । जो आया है उसका जाना भी सुनिश्चित है यह जानते हुए भी हम मृत्यु से घबराते हैं। सब यह भी जानते हैं कि जो होना है वह निश्चित है हम उसमें कुछ भी रंच मात्र फेरफार नहीं कर सकते फिर भी हम परिस्थितियों से सामना करने में सकुचाते हैं। तनिक भी विपरीत परिस्थितियों में घबरा जाते हैं और आत्महत्या जैसा जघन्य पाप तक कर बैठते हैं। जीवन में वही कामयाबी

पा सकते हैं जो हर स्थिति में जीना जानते हैं । कविवर जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियां सटीक हैं-

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या

जिस पथ पर बिखरे शूल न हों

नाविक की धैर्य परीक्षा क्या* *जब धाराएं प्रतिकूल न हों

अनुकूल परिस्थितियों में तो सब सुख का अनुभव करते हैं असली परीक्षा तो व्यक्ति के जीवन में तब होती है जब प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर संकट की घड़ी का सामना कर संतुष्ट रहे।

प्रसिद्ध दार्शनिक और चिंतक ओशो ने कहा है- *जीवन ठहराव और प्रगति के बीच एक संतुलन है।* जब कोई भी व्यक्ति तनाव ग्रस्त होता है तो वह नाना प्रकार के उपक्रम तनाव कम करने के लिए करता है। वह कुछ न कुछ ऐसे कामों में संलग्न हो जाता है जिससे एकाकीपन दूर हो। परन्तु क्या किसी ने कभी सोचा है बाहरी साधनों से एकाकीपन दूर नहीं होता और न ही मानसिक संताप दूर होता है। ऐसे समय में तत्व चिंतन और आत्मसाधना ही ऐसा अमोघ शस्त्र है जो एकाकीपन दूर कर शांति प्रदान कर सकता है। जब मन की आकुलता व्याकुलता समाप्त हो जाएगी तो परिस्थितियां भी स्वमेव अनुकूल हो जाऐंगी। कहने का आशय है नजर बदलते ही नजारे बदल जाएंगे।किसी ने कहा भी है--

नज़रें तेरी बदली तो नजारे बदल गये

***किश्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल गये।**

डॉ.अखिल बंसल प्रधान सम्पादक की कलम से

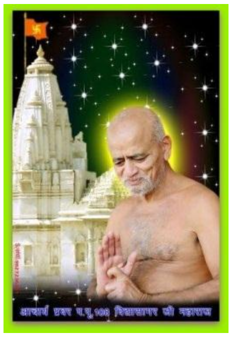

बालक सुरेन्द्र से आचार्य विद्यानंद : एक सफल यात्रा*

- जर्नलिस्ट डा.अखिल बंसल,जयपुर

22 अप्रैल को एक ऐसे व्यक्तित्व की जन्मजयंती है जिसने देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म का परचम लहराया है और विश्वधर्म की अलख जगाई है। ऐसे महान व्यक्तित्व का नाम है श्वेतपिच्छाचार्य मुनि विद्यानंद ! दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रदेश स्थित शेडवाल ग्राम में 22 अप्रैल 1925 के दिन श्री कलप्पा उपाध्याय के घर माता सरस्वती की कोख से एक ओजस्वी बालक का जन्म हुआ जिसका नाम सुरेन्द्र रखा। बालक सुरेन्द्र उपाध्याय का परिवार ब्राह्मण होते हुए भी अनेक पीढियों से जैनधर्म का पालन करता आ रहा था। बालक सुरेन्द्र को बचपन में तैरने का बहुत शौक था वे अपने मित्र सातगोंडा पाटिल के साथ वेद गंगा और दूधगंगा नदियों में घंटों जलक्रीड़ा करते। मीलों तक आलती -पालथी मारकर नदी की सतह पर लेटे हुए तैरते जाना उनके अभ्यास में शामिल था। जल्दी ही वे कुशल तैराक बन गये। शेडवाल के दानवाड़ स्थित शांतिसागर आश्रम में बालक सुरेन्द्र की शिक्षा - दीक्षा हुई। वे संकल्प व धुन के बड़े पक्के थे।साहस व स्वाभिमान तो कूट-कूट कर भरा था। चुनौतियों व खतरों से खेलना उन्हें प्रिय था। नेतृत्व क्षमता तो गजब की थी ही इसलिए साथियों में लोकप्रिय होते देर नहीं लगी। आश्रम में एक दिन उनकी नींद देर से क्या खुली गुरू का यह कहना कि -अगर जल्दी नहीं

उठ सकते तो जिंदगी में कुछ नहीं बन सकोगे ; गुरु तवण्णा की इस डांट ने उन्हें जल्दी उठना सिखा दिया। संगीत से उन्हें बहुत लगाव था इसलिए तरल गांव जाकर विधिवत संगीत सीखने लगे और उसमें पारंगत हो गये। खाली समय में बागवानी करना भी उन्हें प्रिय था।

एक बार चातुर्मास के समय दिगम्बर जैन मुनि उनके गांव के मंदिर में आकर ठहरे। छह वर्षीय बालक सुरेन्द्र घंटों उनके पास बैठते और सेवा के अवसर की तलाश में रहते। नन्हें से बालक की लगन एवं सेवा भाव देखकर मुनिश्री उन्हें आशीर्वाद देते और स्नेह से पीछी उनके सिर पर रख देते।सुरेन्द्र को पीछी का स्पर्श मंत्र मुग्ध कर देता । वे घंटों उसे निहारते, कभी हाथ में लेते तो कभी उसके पंख से गालों को सहलाते। एक दिन जब वे घर देर से पहुंचे तो मां ने ताना मारते हुए कहा-"दिन भर पीछी में रमा रहता है एक न एक दिन तेरे हाथ में बस पीछी ही रहेगी।" मां के कहे यह वाक्य कितने सटीक थे आगे चलकर बालक सुरेन्द्र क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति और फिर मुनि विद्यानंद के नाम से विख्यात हुए।

किशोरवय में उन्हें आजीविका के लिए बहुत पापड बेलना पड़े।कभी लेथ मशीन पर काम किया,कभी प्रभात स्टूडियो में तो कभी साठे बिस्किट की फैक्ट्री में हाथ आजमाया। पर विधि को तो और ही कुछ मंजूर था। वे गांधी जी से बहुत प्रभावित थे। जब स्वाधीनता संग्राम की लपटें उठ रही थीं तो वे कैसे चुप बैठ सकते थे। 1942 के उत्तरार्ध में वे फैक्ट्री को तिलांजलि दे शेडवाल वापस आ गये और भारत छोडो आन्दोलन में कूद पड़े। मित्रों के साथ रातोंरात चौपाल के सामने वृक्ष पर तिरंगा झंडा फहरा दिया। भारत माता की जय के नारों की गूंज से गांव का पटेल घबरा गया। उसने कहा जिसने भी झंडा लगाया है चुपचाप उतार दे बरना जेल की हवा खाने तैयार रहे। राजकोप से बचने के लिए सुरेन्द्र अपने दोस्तों के साथ अज्ञातवाश पर चले गये। सुरेन्द्र चुपचाप

शेडवाल से कित्तूर आ गये और वहां सिक्ख के छद्मवेश में शुगर फैक्ट्री में काम करने लगे।घरवाले खोजवीन करते रहे पर कोई पता नहीं चला। कित्तूर के एक पाटिल परिवार से दोस्ती हो गई और उसके साथ ऐनापुर आ गये। ऐनापुर आचार्य कुंथुसागर जी की जन्मस्थली थी वहां रहकर वे आचार्य श्री के ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। यहीं से उनकी अध्यात्म मार्ग की यात्रा शुरु हुई। यहां उन्हें मोतीझरा ने घेर लिया,शरीर सूखकर कांटा हो गया। मित्र घबरा गया और उन्हें उनके गांव शेडवाल छोड आया।एक ओर घरवालों से मिलन की खुशी थी तो दूसरी ओर शरीर की रुग्णता की पीड़ा। णमोकार मंत्र की आराधना ने उन्हें नया रास्ता दिखाया।उन्होंने प्रण ले लिया कि यदि स्वस्थ्य हो गया तो आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूंगा। गांधी जी जैसा मेरा वेश होगा और राष्ट्र सेवा मेरा व्रत।

संकल्प शक्ति से वे शीघ्र स्वस्थ्य हो गये।1946 में मुनिश्री महावीर कीर्ति जी के सम्पर्क में आए ।उनके प्रवचनों ने ऐसा जादू किया कि वे अब उनके होकर रह गये। सन् 1946 फाल्गुन सुदी तेरस के दिन दीक्षा लेकर सुरेन्द्र अब क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति बन गये और साधना पथ पर अग्रसर हो गये। क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति के रूप में विभिन्न स्थानों पर आपके 17 चातुर्मास हुए। इसी अवधि में आपने 7 वर्ष तक शेडवाल के शांतिसागर आश्रम में अधिष्ठाता पद पर रहकर विकास की गंगा बहाई। राजस्थान के सुजानगढ़ चातुर्मास काल में आपने संस्कृत के माध्यम से हिन्दी का विशेष अध्ययन कर महारत हासिल की। अध्ययन, मनन और चिंतन से आपकी प्रतिभा निखर उठी। अनेक कृतियों का प्रणयन और प्रवचन ने समाज को आपका दीवाना बना दिया। आप जहां भी विहार करते जनमानस आपकी ओर खिंचा चला जाता। 25 जुलाई 1963 को दिल्ली के लालकिला स्थित सुभाष मैदान में आचार्य देशभूषण जी से आपने मुनिदीक्षा ग्रहण की और मुनि विद्यानंद बन गये। दिल्ली से आ.देशभूषण जी

के साथ विहार करते हुए आप गुलाबी नगरी जयपुर आ गये और यहां प्रथम चातुर्मास स्थापित किया। जयपुर में आपके प्रवचन आशातीत सफल रहे। राजस्थान के राज्यपाल डा.सम्पूर्णानन्द और विद्वत् शिरोमणि पं.चैनसुख दास जी न्यायतीर्थ आपके नियमित श्रोता थे। करिश्माई व्यक्तित्व के धनी मुनि विद्यानंद जी उपाध्याय, ऐलाचार्य और आचार्य पद पर शनैः-शनैः पदासीन रह देश भर में अध्यात्म का अलख जगाते रहे। आपने देश के एक कौने से दूसरे कौने तक अनेक बार पद विहार किया और जैनधर्म को विश्वधर्म के रूप में प्रतिष्ठापित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपने सभी को केंची नहीं सुई-धागा बनने की प्रेरणा दी। पचास से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया और सामाजिक एकता को अक्षुण्य बनाए रखने हेतु- मत ठुकराओ,गले लगाओ,धर्म सिखाओ की प्रेरणा दी।"

आचार्य कुंदकुंद कृत समयसार आपके रोम-रोम में बसा था। भ.बाहुबली सहस्त्राब्दी समारोह,जन मंगल कलश प्रवर्तन, भ.महावीर 25 सौ वां निर्वाण महोत्सव,आ.कुंदकुंद द्विसहस्त्राब्दी समारोह, गोम्मटगिरि का निर्माण, हिमालय यात्रा,बाबनगजा समारोह, महावीर जी सहस्त्राब्दी समारोह ,खारवेल उत्सव , भ.महावीर की जन्मभूमि वैशाली में भव्य मंदिर का निर्माण आदि ऐतिहासिक कार्यों के लिए आपकी सूझबूझ तथा तत्परता के लिए आपका नाम जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। आपकी प्रेरणा से अनेक विद्वान विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत हुए। 22 सितम्बर 2019 को दिल्ली स्थित कुंदकुंद भारती में आपकी समाधि हो गयी।ऐसे विरल व्यक्तित्व के धनी संत को युगों-युगों तक याद किया जाएगा।

डॉ.अखिल बंसल श्रद्धालु की कलम से

नये वर्ष की
नव बेला में
जगत पूर्ण हो
आशा।

सुप्रभात की
सुखद छांव हो
सुख की हो
अभिलाषा...!

नहीं किसी का
कभी बुरा हो
ना हो कहीं
निराशा...!!

मंगलमय हों
क्षण जीवन के
मंगलमय
परिभाषा...!!!

मंगलमय सब
"अखिल" काज हों
सिद्धालय हो
बासा....!!!

नीड़ का पंछी

पंछी हो तुम मुक्त गगन के
तुमको रोक सका है कौन
छोड निराशा नीड से निकलो
साध रखा क्यों तुमने मौन।।
सीख लिया जब दाना चुगना
उडना आता है आकाश
दोनों ही ये कर्म तुम्हारे
भरे आत्मवल और विश्वास।।
टेडी खीर गगन तक जाना
सबकी समझ आता है
पथ पर हाथ धरे न बैठो
वह प्रशस्त हो जाता है।।
देखो प्रकृति नियम है पक्का
जो आया वह जाएगा
नदी किनारे जो भी बैठा
खडा वहीं रह जाएगा।।
जिसने कदम उठाया आगे
वह ही इतिहास बनाता है
रणभूमि पर जो भी उतरा
वही विजय श्री पाता है।।
अम्बर हाथ पसारे बैठा
अपना कदम बढाओ तुम
आगे बढकर सीमा त्यागो
सबको 'अखिल'सिखाओ तुम।।

डॉ.अखिल बंसल

‘शांत हवा ..’

माघ माह का ठंडक भरा मौसम और उस पर लगातार बरसता पानी जैसे बिन बरसे, सूखे चले गए सावन की कमी को पूरा करने की जिद ठाने हुए था। तीन चार दिन भरपूर बरसने के बाद आज मौसम साफ हुआ था। अतः बादलों से घिरे सुरमई आसमान में आज खिली चमकती धूप मन को सुहावनी लग रही थी। कड़कड़ाती सर्दी झेलने के बाद धूप की मद्धिम सुनहरी चमक आँखों के साथ तन-मन में ऊर्जा का संचार कर रही थी। कपडें धोकर रधिया ने गीले कपड़े बाल्टी में रख दिए थे। कमली कपड़ों की बाल्टी लेकर छत पर ऊपर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। तभी कमरे में से आती हुई आवाज सुनकर उसके पैर वहीं थम गये।

"कमली ओ कमली!"

"आती हूँ मेमसाब!"

हाथ में पकड़ी बाल्टी वहीं पर छोड़कर कमली आवाज का पीछा करते हुए मेमसाब के कमरे तक जा पहुँची। हड्डियों को चरमराने वाली कंपकंपाती ठंड में भी वो कमरा सुखद गर्माहट से भरा हुआ था। कमली ने नजर घुमाकर देखा तो मेमसाब के कमरे में चारों ओर गर्म हवा फेंकने वाला पीले रंग का बड़ा ब्लोअर चल रहा था।

"जी, मेमसाब आपने मुझे पुकारा"

कमली ने चुनरी से हाथों को पोंछते हुए पूछा था।

"अं..हं..हूँ..हाँ... कमली.. बहुत दिनों बाद आज हम पृथ्वी वासियों पर सूरज देवता मेहरबान हुए हैं। जा कमली.. गीले कपड़े छत पर ले जाकर फैला दे। और देख ये महंगे वाले कपड़े पार्टी वियर हैं। इसलिए जब तक सूख न जाए वहीं पर बैठी रहना। तू तो जानती है न, हमारी कालोनी की छत पर बंदर आँख मिचौली खेलने आते- जाते रहते हैं। और अक्सर नुकसान भी कर जाते हैं। छत पर रखी वस्तुएं और कपड़े उठाकर कहीं भी ले जाते हैं और चीर फाड़ कर दूर कहीं फेंक जाते हैं।" कमली को आदेश देने के साथ ही मेमसाब अपने हाथ में पकड़ी पत्रिका पढ़ने में मशगूल हो गई। अब कमली कमरे से बाहर निकली और सीढियां चढ़ने लगी।

मेमसाब के घर पर काम करने वाली रधिया की बेटी कमली आठवीं कक्षा में पढ़ती है। अपनी माँ रधिया की तरह ही कमली भी मालकिन को मेमसाब कहकर बुलाती है। विद्यालय की छुट्टी होने पर अक्सर वह काम में माँ का हाथ बंटाने के लिए रधिया के साथ चली आती है। वैसे भी मालिक तो दिनभर फैक्टरी के काम से बाहर रहते हैं। शाम को घर लौटते हैं तब तक रधिया और कमली मेमसाब के घर ही ठहरते हैं। वैसे तो मेमसाब के दो लायक बेटे हैं, लेकिन दोनों ही बाहर हास्टल में रहकर पढ़ते हैं। पाँच सौ गज में बनी शानदार, आलीशान कोठी में दो लोगों के हिसाब से खाने पीने का सामान भी अधिक ही रहता है। अतः रधिया मेमसाब की कोठी में बचा हुआ खाना, फल, मिठाई और भी बहुत सी खाने-पीने की वस्तुएं अपनी खोली में ले जाती है। रधिया का पति भी सांझ ढले दिनभर मेहनत मजदूरी करके सौ दो सौ रूपए कमाकर लाता है। सामने जो भी होता है वे सब आपस में मिल बाँटकर खाते पीते हैं। कमली और उसका छोटा भाई ननकू । ये दोनों भाई बहन पढ़ाई में काफी होशियार और समझदार हैं। ननकू अंग्रेजी में कुछ कमजोर है। अतः अंग्रेजी ट्यूशन पढ़ने के लिए सड़क के कोने में बने कोचिंग क्लास में जाता है। वहाँ आने जाने वालों को चाय पानी पिलाने का काम कर देता है। कुछ पैसों की मदद के साथ ही उसे फ्री कोचिंग क्लास की सुविधा मिल जाती है। और शाम तक वह भी घर पहुँच जाता है।

बेटी न होने के कारण कोठी की मेमसाब अपना प्यार लाड़ दुलार भी कमली पर खूब लुटाती रहती हैं। अभी कुछ दिन पहले कमली के जन्मदिन पर मेमसाब ने अपने हाथों से चॉकलेट केक बनाया था और कमली को बड़ी सी गाड़ी में बिठाकर बाजार में साथ ले गई थी। तब उसकी मनपसंद बहुत खूबसूरत पोशाक कमली को दिलवा कर लाई थी। कमली अपनी मनमुराद पाकर खुशी से झूम उठी थी।

वैसे भी बच्चें हो या बड़े हम सभी को प्रेम भाव एवं अपनेपन की चाहत रहती है। मेमसाब के अपनत्व के कारण कमली को कोठी में आना और मेमसाब के आसपास बने रहना,उनके साथ मीठी-मीठी बातें करना, खूब सुहाता भी है।

अक्सर कमली अपनी बादाम सी बड़ी बड़ी आँखें चौड़ी करते हुए कहती है "मेमसाब! बाबूजी के पास इतने पैसे नहीं होते हैं जो वो मेरी और ननकू की पढ़ाई लिखाई में खर्चा कर सकें।इसलिए ननकू की पढ़ाई अच्छी तरह से नहीं हो पाती। किंतु जब मैं पढ़ लिख कर

अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊँगी तो सबसे पहले ननकू को कलक्टर बनने वाली पढ़ाई करवाऊँगी।"

सादगी से परिपूर्ण, कमली के भोले भाले मुखड़े पर हमेशा मुस्कान खिली रहती थी। भविष्य के सुखद सपने बुनते हुए,उसकी चमकीली आँखों में तैरते सुनहरी सपनों का आभास उन्हें अपनेपन का अहसास करा जाता था। बातें करते हुए कमली के मन में जैसे अनेक फूलझडियों सी छूटने लगती हैं।

सच्चाई और ईमानदारी से भरी उसकी भाव-भीनी बातें मेमसाब के दिल में घर कर जाती हैं। कमली के सपनों में जैसे उन्हें बाबूजी के सपने नजर आने लगते हैं। बीते हुए बचपन की मजबूरी का अक्स सामने आ खड़ा होता है। मेमसाब के अपने पैरों पर खड़ा होने और, कुछ बन जाने के सपने बुनते बाबूजी की यादों के साथ उन्हें अपना बचपन झाँकता नजर आने लगता है। बाबूजी के सपने पूरे होने से पहले ही क्रूर काल उन्हें हमसे छीन कर बहुत दूर ले गया। आज मेमसाब के घर में बरकत और सुख शांति समृद्धि बाबूजी के देखें गये सपनों के कारण हैं। तब बाबूजी की तरह वे उसे बेटी की ममता भाव से मुग्ध होकर देखती रह जाती हैं।

मेमसाब! मेमसाब!! अचानक कमली के चीखने चिल्लाने की आवाजें गूँजी, मानो ठंडी शांत हवा में जैसे अकस्मात कोई विस्फोट हो गया हो। आवाज सुनते ही वे हाथ में पकड़ी पत्रिका एक ओर फेंककर ऊपर की ओर दौड़ी। कमली की आवाज सुनकर वे एक साँस में दौड़ते हुए सीढियां पार करके छत पर पहुँच गयीं।

ऊपर जाकर देखा तो उन्हें अपनी आँखों पर सहसा यकीन नहीं हुआ।

उनके पड़ोसी नीरज ने बदनीयती से कमली को दबोच रखा था। सबको छत पर देखकर, अब वह मुहँ चुराते हुए भागने की फिराक में था। लेकिन बहादुर कमली ने उसका पैर पकड़कर घुमाया और जमीन पर पटक दिया। मेमसाब ने बिजली की फुर्ती से, कोने में पड़ी लोहे की रॉड उठाई और उसके सिर पर ताबड़तोड़ वार करती चली गई। यकायक जैसे आने वाले भूचाल के बाद,निस्तब्ध खामोशी छा गई। मेमसाब जैसे सोते से जागी और कमली दौड़कर मेमसाब के सीने से लगकर फूट फूटकर रोने लगी।

✍️ सीमा गर्ग मंजरी मेरठ कैंट उत्तर प्रदेश।

पॉच सौ का नोट

बचपन और युवावस्था में पैसा जेब में रुकता नहीं और बुढ़ापे में जेब से निकलता नहीं कारण यह कि इस उम्र में ईच्छाओं पर बहुत अधिक नियंत्रण हो जाता है । मेरी पेण्ट की जेब में पॉच सौ का नोट ना जाने कितने दिनों से पड़ा था, बाहर घूम आता पर नोट बाहर निकालने की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ती । ये नोट मेरी एक पेण्ट की जेब से दूसरे पेण्ट की जेब में ट्रांसफ़र होता रहता । लगता था नोट पर विराजमान बापू भी एक ही जगह रहते रहते उदास हो गये हैं ।

एक दिन घूमने निकला तो न जाने कैसे वो नोट जेब से गिर गया । घर आकर पता चला तो मैं उसे ढूँढने निकला । सड़क पर जैसे मैं चल रहा था उससे सभी को पता लग रहा था कि मैं कुछ ढूँढ रहा हूँ । तभी अचानक एक व्यक्ति ने पूछा कि आपका कोई नोट गिरा था क्या । मैंने तुरंत हॉ की और उस व्यक्ति से पूछा कि क्या आपने उसे किसी को उठाते हुए देखा है । उसने कहा कि गली के नुक्कड़ पर जो छोटी झोंपड़ी है उसमें एक बारह तेरह वर्ष का लड़का रहता है उसने वह नोट लिया है । मैं तेज़ी से उधर बढ़ा । झोपड़ी के बाहर मैं रुका क्योंकि अन्दर से आने वाली आवाज़ों से ऐसा लग रहा था मानो आज कोई बहुत बड़ा त्यौहार है । लड़का कह रहा था कि मैं आज मॉ के लिए नया दुपट्टा, पापा के लिए नया पायजामा और छुटकी के लिए नयी फ्राक लाया हूँ । तभी ज़ोर से थप्पड़ की आवाज़ सुनाई दी और ये शब्द भी कि तूने ये रुपये कहॉ से चुराये। मैं तपाक से अन्दर गया और बोला “ ये रुपये मैंने आपके बेटे को दिये हैं “ और मैं तुरंत बाहर आ गया । मुझे लगा आज नोट पर विराजमान बापू भी मुस्कुरा रहे होंगे ।

✍ प्रोफ़ेसर अरुण कुमार गौड़

लॉक-डाउन

प्रकाश जी के मिलनसार स्वभाव के कारण उनकी पत्नी बहुत परेशान थी । प्रकाश जी का स्पष्ट निर्देश था कि घर पर आया हुआ कोई भी अतिथि चाय नाश्ता किये बिना नहीं जाना चाहिए । पत्नी आज्ञाकारी स्वभाव की थीं इसलिए उनका पूरा दिन अतिथि सत्कार में ही बीत जाता था । उम्र बढ़ने के साथ-साथ कार्य क्षमता भी घट जाती है । एक दिन पत्नी ने कहा कि ये सब कुछ अब मुझसे नहीं हो पायेगा । प्रकाश जी ने बड़े स्नेह से समझाया कि अतिथि भगवान का रूप होता है उनका सम्मान करना हमारा धर्म है । मैं कैसे किसी को भी मेरे घर आने से मना कर सकता हूँ । पत्नी ने कहा कि अगर आप अनुमति दें तो मैं कुछ करूँ । प्रकाश जी ने स्वीकृति दे दी। अगले दिन पत्नी ने घर के बाहर बोर्ड लगाया जिस पर लिखा था-" स्वागत है केवल उनका जो माता- पिता के साथ रहते हैं और उनका सम्मान करते हैं " इस बोर्ड के लगने के बाद से प्रकाश जी को ऐसा लगने लगा है मानो सरकार ने फिर से लॉक डाउन लगा दिया है ।

✍️ प्रोफ़ेसर अरुण कुमार गौड़

सर्वधर्म सदभाव के संदर्भ सब का मालिक एक है बंदे

सब धर्मों का देश हमारा,राष्ट्रधर्म है सदा महान
धर्म है अपना मजहब अपना, इसकी अलग निराली शान।
सुखद भाव संजोये रहते, करते हम सब उन्हें प्रणाम
ओम नमः शिवाय से जपते, शिव जी का हम सबके भगवान।
करती हो कल्याण जगत का,जीवन सब का पार लगाती
हे मां अंबे जय जगदंबे,तुम को पूजे सकल जहान।

इसलिए जन-जन के मुख से,होता रहता है यह नाद,
हर हर महादेव जी शंभू,जय जय पवन पुत्र हनुमान।
खूब अन्न उपजाती धरती,ये करती है जन का कल्याण
देख के धरती की माटी को,खुश होता है सदा किसान।
पाक बनाने अपना जीवन,नित्य जपे ये महामंत्र है
' णमो अरिहंताणं' ',णमो सिद्धाणं',णमो आइरियाणमं ,'नमो उवज्झायाणं,
'णमो लोए सव्वसाहूणं', साधु संत के जैन धर्म के,हम सब के हैं संत महान

" बोले सो निहाल-," 'सत श्री अकाल '"नारा है सिक्ख लगाते,
'अल्लाह हो अकबर' का नारा साक्षी है अनमोल कुरान ।
चढ़े सलीब पे ईसा देखो,मधुर भाव संदेश सुनाते
सबका मालिक एक है बंदे,ऐसे झूलेलाल के गान ।
मंदिर ,मस्जिद ,और शिवालय,'"रतन' ^है जग में एक समान
सब धर्मों का देश हमारा,राष्ट्र धर्म है बड़ा महान ।

रचना   राजेन्द्र जैन' रतन जबलपुर(म प्र)

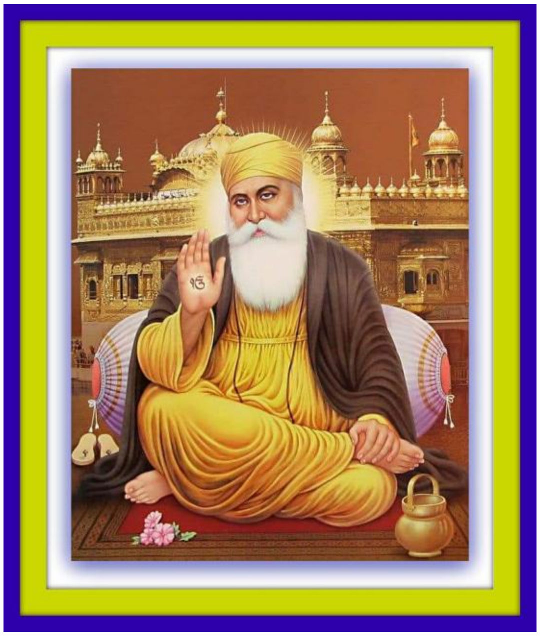

प्रकाश पर्व

प्रकाश पर्व नानक जन्म,नित गुरुवर गुणगान।
जग कार्तिक माह पूनम,सुर दिवाली विधान।
भव सिख धर्म पावन ध्वजा, गुरु मंगल आह्वान।
सुमन्त्र गुरु ग्रन्थ साहिब,गुरुद्वारा गुरु ध्यान।।

शुभदिन भुवन कार्तिक पूर्णिमा।तलवंडी गाँव दिव्य महिमा।।
पश्चिमी पंजाब नदी रावी।जन्मभूमि गुरु विश्व प्रभावी।।
श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती।प्रकाशपर्व विलक्षण महायती।।
जनक कल्याणदेव सुज्ञानी।अद्भुत ताप्तादेवी जननी।।
चौदह सौ उनसत्तर मंगल।पुत्र जन्म आनन्द अविरल।।
नानक ताप्तादेवी नन्दन।जीवकल्याणी जगत् वन्दन।।
बहना नानकी खूब विदुषी।ब्रह्म तत्त्व पूर्णगुरु मनीषी।।

बाल्यकाल शक्ति चमत्कारी।पूज्य नानकदेव अवतारी।।
श्रीगोपालदास गुरु ज्ञानी।श्रीनानक प्रतिभा पहचानी।।
गुरु ओ३म् सर्व रक्षक परमात्मा।जपत सत करतार परमात्मा।।
सिख धर्म नानक महात्मा।दयादान धर्म बने विश्वात्मा।।
सुलक्ख़नीदेवी अर्द्धांगिनी।धर्म परायण जीवनसंगिनी।।
कन्या गुरदासपुर लौखोकी।पतिव्रता जग नारी अनोखी।।
श्रीचन्द,लक्ष्मी चन्द पुत्ररत्न।परम पवित्र संस्कार गुरुयत्न।।
मौलवी अतिफ अनुभववाणी।सब जग प्रबोधक अमृतवाणी।।
तीर्थयात्रा नाम उदासियाँ।निराकार ब्रह्म अनुभव किया।।
बाला रामदास मरदाना।गुरुदेव धर्मसीख मर्म जाना।।
मूर्तिपूजा निरर्थक हि माना।कुरीति पापकर्म अन्त ठाना।।
तीन सिद्धांत जीवन आनन्द।सहजहि वरदान परमानन्द।।
जपो नाम सदा निर्गुण ईश्वर।तदाकार है नित्य परमेश्वर।।
कीरत करौ नेक जीवनभर।जीवनफल सुख बाँटें मिलकर।।
लहना बने उत्तराधिकारी।श्री अंगदेव गुरु बलिहारी।।
करतारपुर हि त्यागी काया।आसोज दशम ब्रह्म समाया।।
गुरु स्वर्णमन्दिर अमृतसरोवर।सिख अकालतख्त धर्म धरोहर।।
केश कंगा कड़ा कच्छा प्रण।**आत्मरक्षा कृपाण धर्म रण।।**
भजनकीर्तन श्रीगुरु दरबार।वाहे गुरु साधना सत्कार।।

सिख धर्म प्रथम प्रवर्तक,गुरु जन्मोत्सव आज।
सेवाव्रत लंगर पुण्य,गुरुकृपा सिद्ध काज।।

किशनलाल जांगिड़ जोधपुर

समाज में नारी का स्थान व महत्व

===================

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता है। हमारे प्राचीन भारतीय वेदों से हमें यह ज्ञान होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में मातृसत्तात्मक था। नारी यह समाज का मूल आधार है तथा ईश्वर द्वारा बनाई गई सबसे खूबसूरत अमूल्य रचना है। समाज में नारी, बहन ,मां, पत्नी ऐसे अनेक रिश्ते निभाती है। शक्ति का दूसरा नाम नारी है। नारी दर्द सहन कर एक नए जीवन का निर्माण करती है। नारी के बिना नर अधूरा है। हर व्यक्ति पर नारी के उपकार होते हैं।कभी माता के रूप में तो कभी पत्नी के रूप में ।जीवन संगिनी के रूप में वह हर कठिन समस्याओं में साथ देने के लिए सदा तत्पर होती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी का अमूल्य स्थान था। नारी को पूजनीय माना जाता था। वेद कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति महत्वपूर्ण थी।

परंतु ना जाने क्यों जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ता गया और मध्य युग आते गया समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई। पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार बढ़ते गए। कभी बाल विवाह,स्त्री भ्रूण हत्या जैसे विकारों ने समाज में अपने पैर फैला लिए। स्त्री को उपभोग की वस्तु समझकर उसे चारदीवारी में कैद कर दिया गया । स्त्री के जीवन को सुधारने के लिए अनेक समाज सुधारकों ने कार्य किया है।वे जानते थे कि यदि एक नारी शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को सिखाती है। स्वतंत्र संग्राम में महिलाओं ने पुरुषों के कदम से कदम मिलाकर कार्य किया। भारत की आजादी के लिए अपना हर संभव योगदान दिया। आजादी के बाद अपना कर्तव्य निभाते हुए महिला पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चलने लगी। आज समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। आज महिला चांद तक जा पहुंची है। परंतु हम यह नहीं कह सकते कि आज संपूर्ण नारी जाति शोषण से मुक्त है। आज भी समाज में नारियों का शोषण किया जाता है। उन्हें उपभोग की वस्तु समझा जाता है। तो दूसरी ओर महिलाएं आकाश की बुलंदियों को छू रही हैं, और हर क्षेत्र में पुरुषों का साथ निभा रही हैं। दहेज की कुप्रथा आज भी समाज में मौजूद है । दहेज के स्त्रियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जाते हैं।यह उचित नहीं । नारी को पूर्ण सम्मान मिलना ही चाहिए।वह ऊंची उड़ान भरने तैयार है,तो उसे पूर्ण अवसर मिलना ही चाहिए। **--प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे प्राचार्य शासकीय कन्या महाविद्यालय मंडला,मप्र**

स्त्री मन में रिश्तों के बीच(भय)अवसाद के कारण और निवारण---

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज के बीच में रहकर ही उचित रूप से जीवन का उन्नति की ओर प्रगति कर सकता है ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक मानव का व्यक्तित्व बहुत से गुण दोषों से मिलकर बनता है । प्रत्येक व्यक्ति का मन त्रिगुण यानि की सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों से प्रभावित होता है ।

इन्हीं गुण दोषों के प्रभाव को आचरण में देखकर हम उसकी प्रकृति और स्वभाव को जान पाते हैं । इन्हीं गुण दोषों के सुसंगत व्यवहार का समावेश ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्धारित करता है। हमारे शास्त्रों के अनुसार जब किसी व्यक्ति में सत्य,शांति,संतोष,शम, दम, दया ,क्षमा ,करुणा ,कर्तव्यनिष्ठा, सदाचार आदि गुणों का सुंदर समावेश होता है तो हम उसे सतोगुणी प्रधान व्यक्तित्व मान सकते हैं । तो किन्ही व्यक्ति में इसके विपरीत अवगुण भी व्याप्त होते हैं तब शिक्षा का अभाव,मूढबुद्दि से मूढ़ता, क्षिप्तता, आलस्य, अकर्मण्यता, अनिद्रा, भूख से अधिक भोजन करना जैसे दोषों से प्रभावित मानव का स्वभाव तामसिक कहलाता है ।इन्हीं अवगुणों के तनमन में व्याप्त होने के कारण संत सुजान प्रकृति के महामानव ऐसे मनुष्य को तमोगुणी कहते हैं ।सजग दृष्टि से हम देखते हैं कि इस सृष्टि की स्थापना नर और नारी इन दोनों के मिलने से होती है ।

ब्रह्मदेव द्वारा रचित सृष्टि का आधार नर और नारी की मैथुनी शक्ति के द्वारा संभव होता है । इस पावन संबंध को निभाने के लिए हमारे शास्त्रों के आधार पर पवित्र अग्नि के चहुँओर सप्तपदी पग के साथ कन्यादान की वैवाहिक रस्मों-रिवाज को पूर्ण करने के बाद कन्या और वर दम्पत्ति के सुखद अहसास में बँध जाते हैं ।जब अपने मायके की लाडली नाजो नखरों में पली

बढी कन्या अपने ससुराल पहुँचती है तो उसके मन में अनेक प्रकार के भय व्याप्त होते हैं। जैसे कि न जाने मेरे ससुराल वालों का व्यवहार कैसा होगा? क्या सासुमाँ ससुर जी जेठ जी जेठानी ननद देवर ननदोई या दादी सास मुझे मन से स्वीकार करेंगे ? अगर कोई मुझसे जाने अनजाने गलती होगी तो माँ बाबूजी की तरह बड़े दिल से मुझे क्षमा करेंगे अथवा मुझे सजा मिलेगी ? क्या मेरे परिवार जैसा ही हँसी-खुशी का वातावरण वहाँ पर होगा ?

ऐसे ही ख्यालों में डूब उतरती जब वह ससुराल की देहरी पर पहुँचती है तो ससुराल के सदस्यों द्वारा मिलने वाले असीम प्यार भाव से निहाल हो जाती है।जहाँ सभी एक दूसरे के सुख दुःख में जान छिड़कने वाले रिश्ते होते हैं। वहाँ पहुँच कर लड़की स्वयं को धन्य समझती है। तब वह हँसी खुशी पारिवारिक जिम्मेदारियों को जी जान से निभाती है।और सुखी सुचारू जिंदगी का सफर तय करने की डगर पर चल पड़ती है।

दूसरी ओर अगर ससुराल वालों का व्यवहार ताने बोली व्यंग और आक्षेपात्मक होता है तो लड़की का सुकोमल हृदय मुरझा जाता है।

मैने देखा है कि अक्सर ननद जेठानी सासुमाँ जैसे बेहद स्नेहिल रिश्तों में बिना सोचे-समझे कुछ भी बोलने के कारण कडवाहट घुल जाती है।

कहीं-कहीं तो घर की बहू को मनमाफिक दहेज का सामान ना देने के लिए लड़की के घर वालों को खूब बुरा भला कहा सुना जाता है।

ऐसी दुखद स्थिति में वह लडकी नये-नये रिश्ते के कारण कुछ बोल नहीं पाती और भीतर ही भीतर अपने मन में घुटने लगती है। भरी जवानी में ही उसका सौन्दर्य फीका पड़ जाता है।बुझे मन से सारे दिन रसोईघर और घर के कामों को पूरा करने के बाद भी उसे कुछ रिश्तों में व्यर्थ ही सताया जाता है।तब वह लड़की असहाय हो सब कुछ सहती है और उसका वह प्रतिकार नहीं कर पाती।कहीं-कहीं तो घर के पुरूष अथवा उसका पति उस पर हाथ तक उठा देते

हैं।ऐसी गम्भीर परिस्थिति में दिल और दिमाग पर नकारात्मकता हावी हो जाती है। सोचने विचारने की मानसिक शक्ति का ह्रास हो जाता है । और मारपीट के साथ ही लाज शरम की सारी दीवारें टूट जाती हैं ।

कहीं कहीं हमें घर की बहू का घर के ही पुरूषों द्वारा रिश्तों की गरिमा और मर्यादा को ताक पर रखते हुए अनुचित शारीरिक मानसिक शोषण भी देखने को मिलता है।ऐसे घुटन भरे वातावरण में वह लडकी अपनी पारिवारिक परिस्थितियों को जानने समझने के कारण माता पिता से भी कुछ नहीं कहती और बद से बदतर स्थिति में भी उस नाकाम रिश्ते का बोझा ढोती रहती है ।

ऐसी विपरीत स्थिति में अच्छी भली उस लड़की मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है । और वह मानसिक अवसाद का शिकार हो जाती है ।

कई बार तो उसका मानसिक स्वास्थ्य इतना खराब हो जाता है कि वह मनोरोगी हो जाती है । उसे गहन देखरेख में चिकित्सा की आवश्यकता होती है। ऐसी शोचनीय स्थिति में उसके मन में अनेक प्रकार के डर भय व्याप्त हो जाते हैं ।व्यर्थ की बातें सोचते रहने से वह हिस्टीरिया स्क्रीजोफोबिया पानी से डरना, बंद कमरे में डरना ,ऊँचाईयों पर जाने से डरना, बार बार हाथ धोना, घर की आवश्यक वस्तुओं को रखकर भूल जाना, । जैसे वहम और मानसिक विकारों से ग्रसित होकर असहज जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाती है ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि नारी परिवार की अमूल्य धुरी होती है । नारी के बिना सुखद और सुंदर परिवार की हम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

जब नारी के मन में भय रुपी अवगुण उसके अवचेतन में बैठ जाता है तो यह उसके परिवार और समाज को प्रभावित करता है । ऐसी स्थिति में नारी ही नारी की दुश्मन हो जाती है । और कुंठा से ग्रसित होकर अपने को बहू से रिश्ते में बडा मानकर घर की मान मर्यादा का हनन करकरती है साथ ही अत्याचारी बनकर अपने ही परिवार की बहू की अवहेलना करती है ।

किसी भी सुखद खुशहाल परिवार के लिए यह स्थिति बहुत खतरनाक होती है। अतएव प्रत्येक स्त्री को स्त्री के प्रति सुंदर सदाचार का आचार विचार पूर्वक आचरण और व्यवहार करना चाहिए। सासुओं को घर की बहुओं को अपनी बेटी समान समझना चाहिए,उन्हें हमेशा याद रखना चाहिए कि जिस माँ बाप ने अपने कलेजे का टुकड़ा तुमको सौंप दिया है उससे अधिक बढकर वो माता-पिता और क्या दे सकते हैं।अगर उनकी बेटी के साथ उसकी ससुराल में ऐसा व्यवहार हो जैसा कि वो अपनी बहू के साथ कर रही हैं। तब उनके दिल पर क्या बीतेगी। आपके घर की बहू भी किसी के घर की लाडली बेटी है।

अब वो आपके घर की लक्ष्मी है। आपके परिवार की मर्यादा और हर्षोल्लास से वंशवृद्धि करने वाली है।आपके जीवन में आपके परिवार के पितरों को तृप्त करने वाली अनमोल उपहार है। इसलिए बहू के साथ कभी भी खराब अत्याचार पूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए। आज आधुनिक युग की सोच विचार में नई पीढ़ी के साथ अगर हम अच्छा व्यवहार करते हैं तभी हम भी बहू-बेटियों से आदर मान सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी बनते हैं। बहूरानी को भी सासुमाँ को अपनी माता समान मानकर आदर व्यवहार करना चाहिए।ननद अपनी भाभी की बहुत अच्छी सहेली बन सकती है।दोनो के बीच अपने मन की बातों को शेयर करने से आपस में मन मिले रहते हैं।और प्यारे रिश्तों में खटास की खाई गहराने से बच जाती है। हमारे बडे बुजुर्गों ने सच ही कहा है कि जिंदगी भर साथ रहने वाले इन रिश्तों में प्यार की मिठास घोलकर तो देखिये। जिंदगी मधुर रस से महकने लगेगी।

सीमा गर्ग मंजरीमौलिक सृजनमेरठ कैंट उत्तर प्रदेश।

चित्राधारित काव्य सृजन-

आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।

नित्य प्रात आँगन में आती।
चीं-चीं करके गाना गाती।
उसकी मीठी प्यारी बोली,
मेरे मन को बहुत लुभाती।।1।।

माँग रही है कुछ खाने को,
फुदक-फुदक सारी अँगनैया।
आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।2।।

घर में ही घोंसला बनाती।
फिर उसमें परिवार बसाती।
इधर - उधर से चुगकर दाने,
बच्चों को भर पेट खिलाती।।3।।

और कहीं जब ना पाती तब
कहती है कुछ दे - दे मैया।
आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।4।।

माँ लाकर देती है दाना।
चुगकर के उनका उड़ जाना।
रास बहुत आता बच्चों को,
चिड़ियों का यह खेल दिखाना।।5।।

देख - देख कर खुशी मनाते
बिटिया रानी चुन्नू भैया।
आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।6।।

धरती का संतुलन बनाने।
आओ दे चिड़ियों को दाने।
बिना परिंदों जीवन सूना,
इन्हें बचाने की हम ठाने।।7।।

छत पर रखें सकोरा पानी
आँगन में दाने या लइया।
आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।8।।

मीत हमारे गगन विहारी।
इनसे करो मित्रता प्यारी।
इनके घर हम नहीं उजाड़ें,
चाहे कितनी हो लाचारी।।9।।

इनके संरक्षण के ऊपर
खर्च करो दस-बीस रुपैया।
आँगन की है शान चिरैया।
श्यामा चिड़िया या गौरैया।।10।।

सुशील चन्द्र पाण्डेय सेमरौता-अमेठी

रंग बिरंगी प्यारी चिड़िया ।
माँ की बहुत दुलारी चिड़िया।।
उसको माँ , माँ को वो भाती।
रोज सबेरे जब आ जाती ।।

माँ जब कुछ भी, करने लगती।
अगल बगल संग संग वो रहती।
कभी फुदकती, कभी उछलती।
कभी पंख फैलाकर उड़ती।।

माँ का निकट उसे भाता है।
भय भी उससे, भय खाता है।।
हम दोनों भी, माँ के संग में।
बतियाते उसके ही ढंग में।।

चीं चीं चूँ चूँ, देती रस भर।
दोनों ही हम, सुनते जी भर।।
यदि हों निश्छल , हृदय हमारे।
वो हमको, हम उनके प्यारे।।

वेद प्रकाश सिंह "प्रकाश"

समन्वय वाणी फाउंडेशन
****

प्रेम की धुन सजाऊँ कैसे?
प्रीतम प्रीति निभाऊँ कैसे?
मैं तो नटखट भोला भाला
राधा तुम्हें मनाऊँ कैसे?

सौतन समझ रख लिया वंशी
वंशी मधुर बजाऊँ कैसे?
दिल के करीब राधा रानी
मन की बात बताऊँ कैसे?

सुलझी उलझन, उलझ गयीं अब
मन - उलझन सुलझाऊँ कैसे?

अटकी सांस राधा यूँ मटकी
प्रिये राधा बुलाऊँ कैसे?

राधे बिन अब अखियाँ सूखी
नैनन नीर बहाऊँ कैसे?

राधा बिन यह कृष्ण अधूरा

हूँ उनका बतलाऊँ कैसे?

राधा कैसे हृदय समायी
सीना चीर दिखाऊँ कैसे?

✍️ आनन्दनारायण पाठक 'अभिनव'©
कौशाम्बी-उत्तरप्रदेश

वाह! सर्कस एक समय था
मुख्य मनोरंजन का साधन।
शहर में पहले प्रचार होता,
सर्कस फिर धूम मचाता था।
गली गली बड़े पोस्टर लगते।
कई दिनों तक यही लुभाते।
सब देखने की कल्पना करते।
सर्कस का हम पास मंगवाते।

सर्कस गाड़ी शोर मचाती थी।
भौपू पर शो सूचना देती थी।
परचे बाँटती हुई गुजरती थी।
बालमन उत्सुकता बढ़ाती थी।

हर्षित मन देखा उसे जा कर।
मुखोटे लगे विचित्र थे जोकर।
करतबबाज हवा में उछलकर।
लोटपोट हो गए हम हँसकर।

हाथी ने खेली खूब फुटबॉल।
जिराफ ने दिखाई गज़ब चाल।
भालू ~चिपांजी जोड़ी कमाल।
जोकर की हास्य कदम ताल।

तोप से निकला नटखट बाल।
शेर राजा पिंजरा था विशाल।
छड़ी से उसे नचा रहा इंसान।
बज रही थी मधुर संगीततान।

तोता मैना में साईकिल दौड़।
हवा जम्प की लगी थी होड़।
मन्त्रमुग्ध हुए सबकुछ छोड़।
उत्सुकता से देखा नया मोड़।

सब खींच रहे थे बड़ा रस्सा।
निकला था पिल्ला छोटा सा।
सर्कस नाम रोमाँच जिज्ञासा।
हमें लगा वह जंगल बुक सा।

किशनलाल जांगिड़ जोधपुर

जिंदगी तीन घंटे का सर्कस है ।

सबकी जिंदगी एक सर्कस है ।
रिंग मास्टर सबसे ऊपर प्रबंध सर्कस है।
कभी आदमी का बचपन सर्कस है ।
कभी जवानी में करता सर्कस है ।
कभी प्रौढ़ा में करता सर्कस है ।
कभी बुढ़ापा की लाठी में भी सर्कस है ।
मनुष्य विभिन्न पशुओं का करता सर्कस है ।
मानव के कंधे पर अनेक कार्यों का तरकस है।
कभी खुद बन जाता धनुष है ।
कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निभाता अनेक तपस है ।
यह जो तीन घंटे का सर्कस है ।
अनेक जानवरों के करतब का जो सर्कस है ।
मानव के मनोरंजन के साथ देता समझ है ।

डॉ. आलोक रंजन कुमार

शृंगार करो ऐसा कान्हा

शृंगार करो ऐसा कान्हा कि
सब जग दर्पण हो जाए।
तेल लगाओ ऐसा कान्हा
कण कण में बस जाए प्रेम।
कंगी चलाओ ऐसी कान्हा
उमंग से भर जाए जन-मन।
वेणी बनाओ ऐसी कान्हा
प्रेम में बंध जाए संसार।
शृंगार करो ऐसा कान्हा कि
धरा स्वर्ग और
स्वर्ग धरा बन जाए।

डॉ. विनोद गहलोत

प्रेम ही गीत है प्रेम संगीत है
प्रेम की नीति है प्रेम ही रीत है
प्रेम से ही सधें काज संसार में
प्रेम रूठे अगर प्रेम मनमीत है।।

प्रेममय मीरा है प्रेममय श्याम है
प्रेममय राधा है प्रेम घनश्याम है
प्रेम में ही छिपी गति संसार की,
प्रेम है कुछ नहीं प्रेम सुखधाम है।।

प्रेम सीता कभी प्रेम ही राम है
प्रेम संभव करे आज सब काम है
प्रेम परिणीति रहती अधूरी सदा
प्रेम में है कहाँ मन को आराम है।।

प्रेममय माता है प्रेममय है पिता
प्रेममय जी सको प्रेममय हो चिता
प्रेम के रूप बिखरे जहां में बहुत
प्रेम में ही छिपी है कहीं अस्मिता।।

सादर:-
राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'

देश के पूर्व प्रधानमंत्री एवं हमारे प्रेरणापुंज 'भारत रत्न' श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती पर शत-शत नमन। अद्वितीय राजनीतिक प्रतिभा के धनी स्व. अटल जी के सपनों का भारत बनाने के लिए हम सभी उनके बताए गए मार्ग पर निरंतर अग्रसर है।

हार नहीं मानूंगा
राह नई ठानूंगा
ऊर्जावान कविताओं का
मिलता है शोर
हे अटल अचल वीर तुम
भारत के सिरमोर
हमारा सौभाग्य है मिला हमें रत्न अनमोल
हे भारत के शूरवीर महकते सारे जहां में तेरे बोल
जीवन को आहूत कर दिया किया देश आबाद
राजनीति की दुनिया में ना कभी बने आप अपवाद
राजनीति के संत अटल
ज्यों पर्वत , नदिया, और हम सबका विश्वास अटल
भारत देश सदा ऋणी तुम्हारा रहेगा
तुम जैसा राजनेता भारत में न जन्मा है न फिर कोई जन्मेगा

स्वाति जैसलमेरिया

'भारत रत्न' श्रद्धेय अटल जी पर केंद्रित दोहे

****

अटल अटल इंसान थे,रखते थे ईमान।
जन-जन के हितकर बने,रखा सभी का ध्यान।।
जीवन में शुचिता लिए,गही सत्य की राह।
उनके चोखे काम लख,निकली मुँह से वाह।।

राजनीति सेवा बनी,रखा समर्पण ख़ूब।
किए सभी कारज सदा,गहरे में नित डूब।।
अटल बिहारी शान थे,रचे उच्च आयाम।
सकल देश करता सदा,उनको सदा सलाम।।

अटल बिहारी पर करे,हर कोई नित नाज़।
करते हैं सबके हृदय,जो हरदम ही राज।।
राजनीति-सिरमौर बन,बने लोक के गान।
जा विदेश में तान दी,भारत की तो शान।।

आदर्शों के पथ चले,लेकर नव उत्थान।
अटलबिहारी दे गए,हमको नवल विहान।।
सबने ही जिनका किया,जी भरकर सम्मान।
अटलबिहारी जी रहे,हर जन के अरमान।।

पावनता के थे शिखर,सेवा के प्रतिमान।
अटलबिहारी जी बने,लोकतंत्र की जान।।
अंधकार को हर लिया,फैलाया उजियार।
अटलबिहारी दे गए,सकल देश को सार।।

--प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला,मप्र-481661

प्रभु परम विलक्षण प्रेमप्रतिमूर्ति।
दर्शन दिव्य दयानिधि राधास्तुति।
स्पर्श अलौकिक आध्यात्म स्पूर्ति।

शृंगार तो एक बहाना मिलन का।
युक्ति है राधा की संयोग सुख का।
स्पर्श पावन कन्हैया तन हर्षित है
दर्शन दर्पण में राधा नैत्र गर्वित है।

स्पर्श दर्शन से प्रेमभक्ति पूर्णता है।
कृष्ण मग्न हो राधे केश बनाते है।
एकटक वो दर्पण कृष्ण दिखते है।
प्रभु सहज प्रेमभाव सदा मिलते है।

किशनलाल जांगिड़

माँ की दुआएँ

रोत मत माँ तेरे आँसू मेरी अमानत।
उदास मत हो माँ तुम मेरी हो जन्नत।
मेरी किस्मत है माँ ममता का आँचल।
स्नेह की नदियाँ उड़ेलती माँ हर पल।

माँ की दुआएँ है जीवन का खजाना।
माँ का सामर्थ्य सबसे बढ़कर माना।
माँ से सीखा मैंने अभावों में जीना।
मेरे सपनों केलिए एक खून पसीना।

माँ ने मेरे लिए ही संघर्ष किया है।
नित निस्वार्थ भाव दुलार किया है।
शक्ति रूप देवी ने संबल दिया है।
सबसे अनोखा वरदान दिया है।

किशनलाल जांगिड़

माँ केवल माँ,,,

माँ केआंसू पोंछ रहा है।
भोला भाला सा इक बच्चा।।
वो क्या समझे, वो क्या जाने।
अक़्ल से है मासूम वो कच्चा।।
वो तो बस इतना ही जाने।
माँ केवल माँ ही होती है।।
बच्चे को सूखे में सुलाकर।
माँ खुद गीले में सोती है।।
ऐसी ही बस माँ होती है।।
दिन भर श्रम की पूजा करके।
कुछ खुशियां दामन में भरके।।
पहले बच्चे को खिलवाती।
शेष बचा जो वो फिर खाती।।
बच्चे को कुछ होए न दुख।
त्याग करे अपने सारे सुख।।
बच्चे के सुख के खातिर ही।
करे नहीं चिंता निज कुछ भी।।
बर्तन झाड़ू मजदूरी कर।
हर दिन करती हँसकर दिनभर।।
इसमें झलक पड़े यदि आंसू।
बच्चे को आ जाती खुश्बू।।
वो क्या समझे इसका कारण।
अश्क पोंछ कर करे निवारण।।
कहे तोतली भाषा में माँ ।
लोना मत माँ लोना मत माँ
इंतजार कर , इंतजार कर।।

बृंदावन राय सरल सागर एमपी

मत रों माँ, लगता हैं सारी खुशियाँ हमसे रूठी हैं।
भूख लगी हैं हम दोनों को, सारी बातें झूंठी हैं।
तुम कहती हो धैर्य धरो, ईश्वर साथ हमारे हैं,
मुझे मिले तो पूछूंगा, क्यों खुशियाँ मेरी लूटी हैं।।
नन्हे हाथ हमारे लेकिन, जल्द बड़ा हो जाऊंगा।
परेशान मत होना माता, पैसे खूब कमाऊंगा।
दुख के अश्रु पोंछ लो माता, बस कुछ दिन के हैं साथी,
खुशियों का एक महल बनेगा, जिसमे तुम्हे बिठाऊंगा।।

- जितेंद्र मिश्रा यायावर
सेमरौता - अमेठी

शीर्षक- एक बालक की अपनी माँ के लिए भावना

माँ तेरे अश्क यूँ न जाया कर,
गम छुपाकर तू मुस्कुराया कर।
ये जमाना हँसेगा बेबसी पर,
हौसले तू नहीं गँवाया कर।

जब मैं थोड़ा बड़ा हो जाऊँगा,
मैया फिर मैं बहुत कमाऊँगा।
मुफलिसी दौर भाग जाएगा,
तुझे फिर मै महल दिलाऊँगा।

मैया फिर तू बनेगी राजरानी,
तेरा घर होगा तेरी राजधानी।
तेरे खजाने भरे होंगे जेवर से,
आँख में ख्वाब होंगे आसमानी।

देख मैया तू अब नहीं रोना,
तेरे संग रो रहा तेरा छौना।
चल चले साथ अपनी कुटिया में,
मैं बिछा दूँ तेरे लिए बिछौना।

माँ तेरे आँसू बेशकीमती है,
तेरे आँसू नहीं यह मोती है।
तुझको मेरी कसम नहीं रोना,
माँ तबीयत खराब होती है।

ऊषा जैन उर्वशी कोलकाता

"...नया दिन"

रवि की रश्मिओ ने वसुधा का हर अंग छुआ।
ऊर्जित एक नए अध्याय का शुभारंभ हुआ।
सुबह के आगमन से हर कली है खिली।
जीने की सभी को एक नई राह है मिली।
खग समूह पूरब की ओर निकल चला।
शांत सौम्य सुगंधित दृश्य आंखों में पला।
आरम्भ हो चुका है सभी का दैनिक कर्म।
सुनहरा है सूरज और है हवा भी है नर्म।

माँझी ने भी पतवार थाम ली है नाव की।
अब आवश्यकता नही है कोई छाँव की।
चित्त को सम्मोहित करती है पावन पुरवाई।
स्वप्न में खोये हुए मन-मयूर ने ली अंगड़ाई।
आशाओं ने भी सभी नव-द्वार दिए है खोल।
भोर के यह नवजात पल है बढ़े ही अनमोल।

मानव भी गहरी नींद से है उठकर जग गया।
सज-सँवर कर वह कर्तव्य पथ पर लग गया।
घनी निराशा का फैला तिमिर बिखर गया।
हुआ हर कोना जगमग प्रकाश जिधर गया।
यह प्रकृति सुख के बीज भी तो बोती है।
अजी! हर रात की सुबह भी तो होती है।

अरुणोदय को देख हर कोई चेहरा खिला है।
आखिर जीने का एक नया दिन हमें मिला है।
आखिर जीने का एक नया दिन हमें मिला है।

"राम" सुथार जोधपुर©

देखो सुंदर स्वर्णिम वेला
भोर की अनुपम लालिमा।
छठ रहा है तिमिर
खत्म हुई कालिमा।।

बिखर रही है किरणें
हो रहा दिनकर का प्रकाश।
पंछियों का कलरव
चहचहाने का एहसास।।

प्रकृति का सौंदर्य
मन को लुभाता है।
मस्त पवन के झोंके
तन में स्फूर्ति लाता है।।

मनभावन है दृश्य
चल रही नाव सरिता में।
खे रहा है नाविक
प्रसन्न सुनहरी लहरों में।।

@पदमा तिवारी दमोह मध्य प्रदेश

नई सुबह निर्झर

नई सुबह जब आये अपने,
संग मे क्या क्या लाती ,
मंद मंद मुस्कान सूर्य की,
किरणें घर घर आ जाती।।

मिटा अंधेरा अपने घर का
हर घर रोसन कर जाती।
धूप तुम्हारी पाते ही मन
जन जन के मन को भाती।।

पंछी पे ढ जहाज के ऊपर
से होकर तुम जाते हो।
तुम्हे ठंड नहीं लगती क्यो,
जैकेट पहिन के आते हो।।

कान बंद करके रखना क्यो
ठंडी हवा है दुःख दाई।
अंदर इनर साथ मे मोजे,
भूल भूल क्यो आते हो।।

सूरज दादा को हम बढ़िया
अदरक वाली चाय पिलाते
निर्झर हम का करे आप
उतने ऊपर से जाते हो।। 🦜
****

कुंजी लाल चक्रवर्ती 🙏 निर्झर
जबलपुर मध्य प्रदेश

नूतन वर्षाभिनंदन

नया काल है,नया साल है,गीत नया हम गाएंगे ।
करना है कुछ नवल-प्रबल अब,मंज़िल को हम पाएंगे ।।
नया उग रहा देखो सूरज,
हँसता नवल प्रभात है।
शुभ-मंगलमय बेलाएँ हैं,
ढलती अब तो रात है।।।
बीत गया जो,विस्मृत करके
नव उत्साह जगाएंगे
सुखद पलों को स्मृति में रख
कटुता को बिसराएंगे
नई ऊर्जा,नई दिशाएं,नव संकल्प सजाएंगे ।
करना है कुछ नवल-प्रबल अब,मंज़िल को हम पाएंगे ।।
अंतर्मन में शुचिता लेकर,
नव परिवेश बनाएंगे
हर इक को हम लगें मधुर शुभ,
ऐसे भाव निभाएंगे
रीति-नीति औ' प्रीति पिरोकर,माला गूंथे जाएंगे ।
करना है कुछ नवल-प्रबल अब,मंज़िल को हम पाएंगे।।
आशा औ' विश्वास के मोती,
हम सबकी आभा होंगे
लगन,समर्पण,सत्य-आग्रह,
हम सबकी शोभा होंगे

आगत तो है मधुर-सुहाना,यह सबको दिखलाएंगे ।
करना है कुछ नवल-प्रबल अब,मंज़िल को हम पाएंगे ।।

-प्रो.(डॉ)शरद नारायण खरे
प्राचार्य

गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस

सिखों के नोवें गुरु वो,
श्री तेगबहादुर अद्‌वितीय थे।
आदर्शों की रक्षा करने,
हंसते हंसते प्राण दिए।1

पिता हरगोविंद,मां जानकी,
भार्या उनकी माता गूजरी थी।
अमृतसर में जनम लिया,
धर्म के हित बलिदान दिया।2
जान से प्यारा धर्म उन्हें था,
हिन्द की चादर कहलाते हैं।
शहीदी स्थल गुरुद्‌वारा साहिब,
शीशगंज नाम से सब जानते हैं।3

औरंगजेब ने शर्त रखी थी,
जान के बदले इस्लाम कबूले।
हंसते हंसते जान दे दी पर,
धर्म के साथ समझौता नहीं।4
औरंगजेब ने चांदनी चौक में,
उनका सर कलम करवाया।
जान की आहुति देकर उन्होंने,
स्वधर्म का मतलब समझाया।5
सिर दिया पर सार न दिया,
तेगबहादुर ने ये बात सिखाई।
अनमोल विचारों से दुनिया को,
जीवन जीने की कला सिखाई।6

त्यागी,बलिदानी,ज्ञानी ध्यानी,
ऐसे संत भारत भूमि में ही जन्मते हैं।
आज शहीद दिवस पर उनको,
हम सब शत शत शत नमन करते
हैं।7

रश्मि पांडेय शुभि डिंडोरी मध्यप्रदेश

वक़्त से टकरा रहा हूँ बिन ये सोचे
ओ मेरे कर्मों के फल तुम कब मिलोगे

एक मुद्दत हो गयी इक जंग में हूँ
जंग भी ऐसी जो चलती अनवरत है
हार की सम्भावनाएँ देख कर भी
मन कहाँ ये जंग से होता विरत है
प्यास से लड़ता निरन्तर बिन ये सोचे
ओ मेरी बारिश के जल तुम कब
मिलोगे

आदमी का रूप ही होते हैं रिश्ते
ख़ुद कहाँ सम्बन्ध परिभाषित हैं होते
हैं कहीं रिश्तों में जकड़े आदमी तो
हैं कहीं पर आदमी रिश्तों को ढोते
दोस्ती करता हूँ सबसे बिन ये सोचे
ओ मेरे मित्रों के छल तुम कब
मिलोगे

खेलता हालात से अपने मुताबिक़
जंग भी इक खेल सा लगने लगी है
जानता हूँ खेल की नियमावली भी
मेरी हर इक चाल को ठगने लगी है
खेल में रहता हूँ शामिल बिन ये सोचे
ओ मेरे नायक के खल तुम कब
मिलोगे
खेलता हालात से अपने मुताबिक़
जंग भी इक खेल सा लगने लगी है
जानता हूँ खेल की नियमावली भी
मेरी हर इक चाल को ठगने लगी है
खेल में रहता हूँ शामिल बिन ये सोचे
ओ मेरे नायक के खल तुम कब
मिलोगे

है सही कि अब ज़रा थकने लगा हूँ
साँस की रफ़्तार के सुर चढ़ रहे हैं
किन्तु मेरे ख़्वाब के ख़ामोश पंछी
आज भी तामीर पाने बढ़ रहे हैं
नापता रहता हूँ पथ को बिन ये सोचे
ओ मेरी मन्ज़िल के पल तुम कब
मिलोगे

©✍ *लोकेश कुमार सिंह
'साहिल'*

नव कोपल नव पर्ण

नव कोपल नव पर्ण यही हैं,
यह ही जीवन की आशा।
उन्नत भाल करेंगे यह ही,
रचेगें इक नव परिभाषा।।
ना जाने क्यों भटक रहे हैं,
भूले निज पथ सहज नहीं।
पालक पोषक की मजबूरी,
बोझ उठाते महज वही।।
विषम काल से जीत इन्ही की,
होनी तय यह ही मानो।
सकल सुलभ मंजिल तय होगी,
कर्म शील हैं सब जानो।।
भाग्य बदलने में माहिर हैं,
श्रम को कर्म बना डाला।
धैर्य धरो हे मनुज। पूत तुम,
पिएंगे शिव यह भी प्याला।।
कार्य करो निज धर्म न त्यागो,
खुद अपनी तकदीर गढ़ो।
मनुज बनो पावन मन रख कर,
सुंदर इक तस्वीर मढ़ो।।

सादर:-
राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'

हिंदी दिवस-गीत

आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।
हिन्द व हिंदी में ही रम जाएं।।
देव पुरुषों की है यही भाषा।
भारतीय बुनें इसमें ही आशा।।
इसको पूरा आज मान दिलवाएं।
आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।।
हिंदी में माता लोरी सुनाती।
हिंदी में ही बहन गुनगुनाती।।
हिंदी में ही गुरू जी पढ़ाएं।
आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।।
मित्र लड़ते तो हिंदी ही बोलें।
सखी इसमें ही सब राज खोलें।।
हिंदी में ही लिखें हिंदी गाएँ।
आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।।
ज्ञान विज्ञान को यह है भाई।
माता अम्मा मां जी व बाई।।
गीत पूजन भजन इसमें गाएँ।
आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।।
लोकतंत्रात्मक इसका ढांचा।
सूर तुलसी व मीरा ने बांचा।।
व्याकरण इसका आओ समझाएं।
आओ मिलकर इसे हम सुनाएं।
हिन्द व हिंदी में ही रम जाएं।।
सादर:- राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'

" राधा श्याम प्रेम दोहे "

मिला संग जो श्याम का ,मुख पर गौरव भान।
नैनों में छवि है बसी ,रखा प्रेम का मान ।।

रंग प्रीत का जो लगा , हृदय सजा है नेह ।
प्रेम मगन जब मन हुआ ,सुधबुध भूली देह ।।

माला गले कदम्ब की , बंसी धारे हाथ ।
अधरों पर मुस्कान है , राधा जो हैं साथ।।

नैना मूदे जो रही , मन में खुशी अपार।
पा कान्हा की प्रीत को , सपन हुआ साकार ।।

बिखरी है लट केश की , हिना रची है लाल ।
कन्धे सिर रख कान्ह के , राधे हुई निहाल।।

रूप सलोना श्याम का , और चॉदनी रात।
इक दूजे में खो गये , करते मन की बात।।

प्रेमसिंधु में डूबना , राधा के मन भाय ।
पकड़ पिया की बॉह को , पलकें मूंद लजाय।।

राजश्री राठी अकोला

मोह छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसर ने जइयौ |
मोरे ब्रज के तुम रखवारे, मोरे नीरे रहियौ||
की के लाने कंगना पहनूँ, की के लाने बहदी |
तोरे सूने में अब कैसे हाथ लगाहो महदी ||
रहिके नीरे तुम तो मोरी, चुटिया रोज गुबइयौ |
मोय छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसर ने जइयौ ||
की खों मैं सिंगार करौगी, बन के नई दुलहनियाँ |
दर्पण देखे राधारानी, बोले मोरी जुदइयाँ ||
मीठी -मीठी बातें करिके, मोखो खूब हँसइयौ |
मोय छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसर ने जइयौ ||
जब पनघट की गैल धरे सब, फोड़े वो गागरियाँ |
प्रेम भरी नजरन से देखे, ले-ले जाय चुनरियाँ||
जैसो प्रेम करत रय अब लो, ऊसई प्रेम जतइयौ |
मोय छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसर ने जइयौ ||

खेतन में उजड़ा पड़ जाने, गइयै रोज रँभाने |
इन आँखन से गंगा जमना, नदियाँ सी बै जाने ||
को ब्रज की रखवारी करहै, सबखों इतनी बतइयौ |
मोय छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसरने जइयौ ||
कोयल खों जब कू -कू करने, सुध तोरी आ जाने |
ऐसो लगने फट गई धरती, मन मोरे मर जाने ||

जो तुमको जाने है तो फिर, राधा को गैल बतइयौ|
मोय छोड़ ने जइयौ कान्हा, मोय बिसर ने जइयौ |
_ चौधरी आशा निर्मल जैन

कृष्ण की जादुई मनोहारी छवि

व्योम विशाल व्यक्तित्व का, जो सार्थक दृष्टांत।
कृष्ण मनोहर की छवि,सौम्य सरलतम शांत।।

आभा मुख मंडल यथा,शत रवि को करे ध्वस्त।
मंदाकिनियों सहित बसे , जिसमें सृष्टि समस्त।।

शिखि पाँख मुरलिया अधर पर,पीताम्बर सजे अंग।
श्याम वर्ण कुंतल घने, नटवर छवि उमंग।।

बैन मुखर मृदु भाष्य में, मन का मन हर जाय।
श्याम मीत की छवि लख, मन कहीं चैन न पाए।।

कृष्ण छवि में बस रहा,षोडश कला प्रकाश।
दुर्नय दुर्गम तमस का,समूल करे जो नाश।।

हिमांशु जैन मीत   इंदौर

राधा कृष्ण की बड़ी सुंदर छवि,
निहार रहा अथाई का हर कवि।

जो गोपियों के संग रास रचाये,
बंसी की धुन पर सबको नचाये।

राधा रानी का श्रृंगार देखकर,
निहारे कान्हा निकट बैठकर।

मोहन मुस्कान लगे बड़ी प्यारी,
हरख-हरख राधा जी बलिहारी।

ना कोई चाह ना ही कोई आशा,
निस्वार्थ प्रेम की यही परिभाषा।

ऐसा प्रेम जो इस जग में होता,
हर युगल कृष्ण-राधिका होता।

- सौ.सुमिता मूंधड़ा , मालेगांव

श्याम प्रेम श्री राधे

जिन नैन में श्याम बसे, उसमें दूजा कौन समाएं
हर एक रूप में मोह, श्याम ही श्याम नजर आएं

आएं मेरे सांवरिया, देखो आज मोहे सजाने
मैं बैठी कान्हा के आगे, कंघी से बाल मेरे संवारे

मैं हूँ उनकी राधा रानी, वो मेरे श्याम कन्हाई
बलि हारी सखी इस रूप पे, लू मैं आज बलाई

सांझ -सवेरे तुझको देखूँ, लूं हर धड़कन से नाम
प्रीत की रीत सदा जग में, गूजेंगी तेरे ही नाम

मोर मुकुट पीताम्बर साजे, मुरली अधरन पर बाजे
सुध- बुध बिसराएं राधे गौरी, मधुर तान पर नाचे

आज सजी सखी मैं ऐसे, कर सोलह श्रृंगार
रूप पे मेरे मोहित हुएं, मेरे सांवल सरकार

देख युगल छवि प्यारी, अंतस माही वीणा बजे
शत्-शत् करू मैं वंदन, उर में श्री राधे कान्हा बसे

"शमा जैन सिंघल जोरहाट असम"

अलौकिक प्रीत

राधे- क्या श्रंगार करोगे मेरा।
मेरा तो श्रंगार तुम्हीं हो।
मैं तो तुमसे ही सजती हूं
मेरा तो आधार तुम्हीं हो।
गिरधर ह्रदय एक हमारे।
मेरे नयना नयन तुम्हारे।
तन दो लेकिन रूह एक है।
प्राणाधार प्रभु आप हमारे।
बिंदियां मेरी दमके तुमसे ।
कंगना मेरे खनके तुमसे।
नयन मेरे का हो तुम सुरमा।
बेणी का गजरा है तुमसे।
तुम मेरे नूपुर की रुनझुन।
तुम मेरे पायल की छनछन।
अधर रची लाली में तुम हो।
तुमही हो जियरा की भटकन।
तुम्ही मेरी लाल चुनरिया।
तुम्ही मेरी निरी उमरिया।
मेरा तो अस्तित्व तुम्हीं हो।
मुझे करो स्वीकार सांवरिया।
प्रीत मेरी तुम रीत मेरी।
हो जीत मेरी तुम्ही कान्हा।
गीत मेरे तुम मीत मेरे।
परणीत मेरे तुम्ही कान्हा।
कान्हा- प्राणेश्वरी आप हैं राधे।
नाम तेरा मेरे कंठ बिराजे।
तुम बिन सार नहीं कुछ मेरा।
नाम पूर्ण तेरे नाम से मेरा।
तुम तो मुझमें ही हो राधे।
एक बदन हम आधे-आधे।
पथ ये ही है मेरे मिलन का।
बस तेरे एक नाम को साधे।

-श्रीमती नितिन शर्मा "नीति"

राधाकृष्ण की अमर प्रीति

विधा--गीत

राधा-कृष्ण नेह की गाथा,सबके मन को भाती है।
हर उर में,हर चिंतन में,नित-नित अनुराग जगाती है।।
बंशी की मीठी धुन सुनकर,
मौसम बने सुहाने।
राधा की अलकें साधी थीं,
किशन हुये दीवाने।।
यमुना तट पर रास रचाया,याद युवा बन जाती है।
हर उर में,हर चिंतन में,नित-नित अनुराग जगाती है।।
बरसाने में रंग बरसते,
प्रीतिपगा हर सावन था।
हर क्षण,हर मौसम तो देखो,
बेहद ही मनभावन था।।
ऐसा पावन राग कहाँ है,जय गुंजित हो जाती है।
हर उर में,हर चिंतन में,नित-नित अनुराग जगाती है।।
भौतिक दूरी,पर निश्छलता,
विरह सताता था उनको।
पर अपना कर्तव्य निभाने,
समझाया था निज मन को।।

अमर कथा अनुराग लिए है,मिलन-गीत बरसाती है।

हर उर में,हर चिंतन में,नित-नित अनुराग जगाती है।।

युगों-युगों तक गोकुल खुश है,

प्रेमरूप पाया था।
ग्वालों,गायों,गोवर्धन ने,
जीवन सरसाया था।।
राधा-श्याम सदा हैं पूरक,गाथा हरसाती है।
हर उर में,हर चिंतन में,नित-नित अनुराग जगाती है।।

--प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे

एक रोज़ राधा कृष्ण का प्रेम वार्तालाप कविता बन गई पेश करता हूं आप के लिए
अखिल सेतु वार्षिकी के लिए पहली बार ...
ओ पिया रंगरेज..
ओ पिया रंगरेज़
ओ पिया रंगरेज़
देख बैरन अंखियन की उदासी
असुअन से लिखी डाली पाती
सावन आने को है ..
पी को आने का संदेसा भेज
ओ पिया रंगरेज़
ओ पिया रंगरेज़
हवाओं में दर्द घुला
महकती ज़ल्फ़ों का है गिला
भीगी भीगी चुनरी भी कहे
पी को आने का संदेसा भेज
ओ पिया रंगरेज़
ओ पिया रंगरेज़
बोर न बोले बाली न बोले
नथनी न बोले कंगन न बोले
पायल की छम छम ही बोले
पी को आने का संदेसा भेज
ओ पिया रंगरेज़
ओ पिया रंगरेज़
क्या बोले सुनो फिर पिया रंगरेज़
ओ *पी* की दीवानी
ओ *पी* की दीवानी
सुन मेरी तू बात सयानी
रुख़सारो की लाली, संभाल
चेहरा बना कर मुस्कानी
घूंघट में रूप अपना सहेज
पी के आने संदेसा लाया रंगरेज़
बस आने को है बस आने को है
लबों पर *पी* के मिलन का प्रेमगीत सहेज...
पी के आने संदेसा लाया रंगरेज़
बस आने को है बस आने को है

@स्नेहदिल नरेश चावला
9462615864

कृष्ण कब आओगे

हे मधुसूदन माधव मनोहारी नंदलाल,
कसक ये रूहानी कब मिटाओगे ,,,?
हे कृष्ण कहो कब आओगे,,,,,,,,,?
उदास मन निकुंज की ,
यह गलियां सारी ,
मृदुल मुरली की ,
तान कब लगाओगे ,,?
हे कृष्ण कहो कब आओगे,,,,,,,?
सूना सूना यमुना तट का उपवन,
कह रही गोपियां,
संग राधा रास कब रचाओगे?
हे कृष्ण कहो कब आओगे,,,,,, ?
मनमोहक चितचोर ,
अनोखी छवि तुम्हारी,
छाई जीवन में उदासी,
हरने कब आओगे,?
हे कृष्ण कहो कब आओगे ,,,,,,,?
प्रेम दीवानी मीरा का इकतारा पुकारे,,,
बोल रही राधा की मखमली प्रीत,
हे कृष्ण कहो कब आओगे,,,,,,,,?
रुकमणी हृदय कमल करे सोलह श्रृंगार,
मधु प्रेम विरहन के चित उपवन की चाह,
हे कृष्ण कहो कब आओगे,,,,,,,?

मधु वैष्णव 'मान्या' जोधपुर राजस्थान

घर की चौखट

आज दिल कुछ उदास है,
बैठी जा रही मेरी सांस है,
बेटे की नौकरी लग गई,
मानो घर की चौखट छूट गई।
मौका खुशी का है या गम का,
आज का सुख देखूं या कल का,
हर तरफ छाई तन्हाई है,
बेटे की अब घर से विदाई है ।
मालूम था मुझे यह दिन आएगा,
बेटा शहर में जाकर बस जाएगा,
सपना तो वह मेरा पूरा कर रहा,
घर आंगन उसका उससे छूट रहा।
ख्वाब जो बुने थे मैंने,
हकीकत का जामा पहनाने,
बात पत्थर की लकीर बन गई,
मानो घर की चौखट छूट गई ।
बच्चों के बगैर घर हो गया खाली,
बगैर फुलवारी क्या करें माली,
पूछ रही हूं खुद से खुद ही,
यह क्या कर बैठी हूं मैं बावली !
जीवन बीत गया है काफी,
जो बचा है वह है कम ,
मन लगने का ना है गम,
बस बच्चों को ना घेरे तम।
ईश्वर से अरदास यही,
खुशियां देना उनको सभी ,
घर की चौखट भले ही बदले,
मेरे संस्कारों को कभी ना भूले।
गर्व करे,ये मां तुम पर ,
पुण्य कर्म के लगाओ उपवन ,
तुममें दिखती मेरी परछाई है,
और ये ही मेरी असली कमाई है।।

स्वाति मानधना ' सुहासिनी'
बालोतरा

अखिल सेतु वार्षिकी
आह्वान गीत

अनीति से डरो नही,
क्रूरता वरो नही,
मुश्किलों में बन अडिग,
तुम कभी रुको नही।।

कालजित सपूत हो,
मुक्त युक्त द्वार दो।
टूटते जो जा रहे,
बढ़ उन्हें आधार दो।
हे विजय के सारथी,
वसुंधरा के भारती,
हर कुचाल ध्वंस दो,
विषाद से घिरी मही।
तुम कभी, रुको नही।।

तुम बढ़े , बढ़े सभी,
कर्म में लगे सभी,
दीन हीन प्रान हो,
मृत्युंजयी महान हो,

तुम बढ़े , बढ़े सभी,
कर्म में लगे सभी,
दीन हीन प्रान हो,

मृत्युंजयी महान हो,
देश को प्रकाश दे,
हो अक्षय भरो मही।
तुम कभी रुको नही।।

तुम शोषतों के प्राण हो,
दलितों की। गुहार हो।
क्रोध में प्रलय तुम्हारे,
प्रेम में उदार हो।

जिंदगी सँवार दो,
आश तुमसे है यही।
तुम कभी रुको नही।।

वेद प्रकाश सिंह "प्रकाश"
सम्पर्क--9695257521
ककरी, बाराबंकी, 225126,
उ0 प्र0

मत्तगयन्द सवैया
^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

मोहन की मुरली धुनि बाजत दौरि परी बृज की सब गोरी।
भानु सुता तट छाँव कदंब विराजति हैं बृषभानु किशोरी।
हाथ रचे रधिया जु हिना नथ केशन की लट है उरझो री।
स्याम सँवारि रहे सुरझाइ *सुशील* हिए छवि याहि बसोरी।।

दर्पण हाथ गहे रधिया निज रूप निहार लजाय रही है।
मोहन के कर से उरझे वहु आपन केश गुँथाय रही है।
का कहिहैं पुरुलोग विलोकि विचारि हिए सकुचाय रही है।
मूरत ई मनमोहन की बृषभानु लली सँग भाय रही है।।

बेंचि दुहूँजन लोकहुँ लाज यही बिधि आपन प्रेम जतैहैं।
प्रेम पगी बृज की बनिता तुहरे कर से जब वेणु गुथैहैं।
जानि गयीं यशुदा कतहूँ मन मोहन काउ तुहै उ कहैहैं।
ग्वालिनि ई छछिया भर छाछ बरे अब देखहु काउ करैहैं।।

सुशील चन्द्र पाण्डेय
सेमरौता-अमेठी

हे कृष्णा

आईना देख क्यों
आते हो तुम याद
दर्द के दरिया में गुजरती
इश्क की सारी रात

दो लफ़्ज़ों में
गुजरते लम्हों में
आंखों के कोरो में
भीगी पलको में
कदमों की आहट में
मोहब्बत की सांसों में
खामोश रुदन में
कौनसी खता मुझे
यूँ सज़ा देती है
हज़ारों मुश्किलों में
तुम्हारा पता देती है

मन के सैलाब ने
यें कैसा तीर मारा है
सदियों की प्रतीक्षा से
मुक्त करों मुझे या कुछ
ऐसा करो कि भ्रम हो
कान्हा..
तुमने मुझे पुकारा है।।

स्वाति जैसलमेरिया

*स्वस्थ जीवन का आधार-
केवल शाकाहार*

स्वस्थ जीवन का आधार,
मात्र और मात्र शाकाहार।
पेट है, कोई क़ब्र नहीं,
याद रहे यह सुविचार।

जब चलती चाकू की धार,
मूक जीव रोता लाचार!
क्यों मर जाती संवेदनाएं,
मानवता क्यों जाती हार?

खाना माखन, मिश्री, मेवा,
पशु-पक्षी की करना सेवा।
सब्जी, फल, विविध अनाज,
हैं ऊर्जा के स्रोत -भंडार।

तामसी लहसुन-प्याज सुनो,
शुद्ध सात्विक भोजन चुनो।
अभक्ष्य अंडा, मांस, मच्छी,
करना त्याग कहूँ बारंबार।

पवित्र शाकाहारी भोजन,
रखता शुद्ध तन और मन।
पवित्रता की राह चल कर,
जोड़ देना प्रभु से तार।

सभी धर्मों ने सिखलाया,
अहिंसा धर्म मन को भाया।
पशु-पक्षी, जीव-प्राणी,
रखो सबसे करुणा- प्यार।

मालिनी त्रिवेदी पाठक

स्वस्थ जीवन शाकाहार।।। दोहे।।

जैसा खाओगे यहां, हो वैसा व्यवहार।
सर्वोत्तम हैं इसलिए, खाएं शाकाहार।।

पशू मांस मत खाइये, हिंसक हो व्यवहार।
सर्वोत्तम हैं धरा पर, करिये शाकाहार।

शेर मांस ही खात हैं, यह उसका आहार।
तू लेकिन क्यों खा रहा,पशु जैसा व्यवहार

सर्वोत्तम आहार हैं, खाओ शाकाहार।
भक्षण मांस ना कीजिये, यह पापी व्यवहार।

बुरा मांस आहार हैं, कई रोग को देय।
क्रोध तनाव कामुकता, मुफ़्त यही दे देय।।

ज्ञानी जन कहते सदा, शाक पात बेजोड़।
वसा कोलेस्ट्रॉल को, दूर करन को तोड़।।

डेयरी का उत्पाद भी, कम करिये श्रीमान।
फल अनाज औ सब्जियाँ, कर देती बलवान।

मोटे होते नौ गुना, करते मांसाहार।
प्रोटीन औ कैल्शियम, देती शाकाहार।

पूर्वजो ने है कहा, जैसा खाओ अन्न।
गांठ बांध लो समझ लो, रहेगा वैसा मन।

- जितेंद्र मिश्र " यायावर "
ग्राम पोस्ट सेमरौता जिला अमेठी।

शाकाहार को तुम अपनाओ

---------- ------ ---------

मांसाहार का त्याग करो अब,
शाकाहार को तुम अपनाओ।

अब अपना कर्तव्य निवाहो,
आज करो संकल्प रे मानव।

संकल्पों को तुम दोहराओ,
शाकाहारी बनो मनुष्य तुम।

वृक्षों सम सम्बल बनाओ,
वृक्ष सदा ही छाया देते।

फल और फूल सदा ही देते,
मिट जाने पर काया देते।

संतो सम परिभाषा इनकी,
महल अटारी घर दरवाजे।

वृक्षों की ही देन समझ लो,
बदले में हम क्या देते ?

मानव हो तुम यही समझ लो,
अरे "रतन "अब जतन करो तुम।

हरित क्रांति ला कर दिखलाओ,
हरित क्रांति ला कर दिखलाओ।

राजेन्द्र जैन "रतन "
जबलपुर म प्र

शाकाहारी बने,

****

नहीं सता जीवों को मन से,
कर दे दूर विकार।
ये प्राणी बन तू शाकाहार,
ये प्राणी बन तू ***
तेरी खातिर दूध् दही घी,
छप्पन भोग बनाया,
मेवा और मिष्ठांण का सुंदर,
ये व्यन्जन बनवाया,
*फिर भी मदिरा पान करे
क्यों खोले नरख दुवार,
ये प्राणी बन तू***
तरह तरह के फल का सेवन,
कर तू जरा विचार,
बढ़िया भोजन दाल चांर का,
ये तेरा आहार,
*इन सबसे क्यों चित्त हटा,
कर रहा जीव को मार
ये प्राणी बन तू***
उत्तम शाकाहार से हरदम,
रहे निरोगी काया,
मन बुद्धि उत्तम रहती स
जिसने इसको अपनाया
*जिओ और जीने दो*निर्झर*
हे सबका अधिकार
ये प्राणी बन तू***

****

कुंजी लाल चक्रवर्ती निर्झर

जीवन का आनंद

विधा : कविता

होठों पर हंसी हो
आँखो में नमी हो।
दिल में सुकून हो।
तो खुशी झलकती है।
और चेहरा कमल सा
एक दम खिलता है।
इसलिए तो सभी से
इनका दिल मिलता है।।

जीवन तो मिला है
यहाँ हर किसी को।
पर जीने का अंदाज
सबका अलग अलग है।
कोई खुश है तो
कोई बहुत दुखी है।
पर मरने के लिए
कोई राजी नहीं है।।

हर स्थिति में जीने को
लोग यहाँ राजी है।
कुछ जिंदा दिली से
तो कुछ दवके जीते है।
पर अपने गमो और
खुशी में मस्त रहते है।
और मानव जीवन का
लुप्त सभी उठाते है।।

जय जिनेंद्र
संजय जैन "बीना" मुंबई

: *पालो नहीं निराशा*
मन में

सभी काम हो जाते हैं अक्सर,
बीच में जब ना वे छोड़े हैं जाते।
पालो नहीं निराशा मन में कोई,
सभी काम समय से होते चले जाते।।

चलते चलते ही मंजिल मिलेगी तुम्हें,
ठहर जाने तो नहीं रास्ते काटे जाते।
है कठनाई थोड़ी,गहन है अंधेरा,
मगर रोशनी से गहन अंधकार हट जाते।।

कोशिश करो नहीं पीछे हटो तुम,
अपनी ताकत पर भरोसा करना ही होगा।
पालो नहीं निराशा मन में तुम अपने,
इस पर्वत को तो पर करना ही होगा।।

अकेले जग में आये हैं हम,
जाना भी हमें अकेले होगा।
मिलना बिछड़ना खेल यहीं का,
वहाँ ना कोई बेगाना होगा।।

अगम है नदिया इस जीवन की,
पार तो प्राणी करना होगा।
पालो नहीं निराशा मन में,
प्रभु से तेरा मिलन भी होगा।।

चन्द्रकला दुबे
डिंडौरी

साँझ का दीप हूँ मैं.
मोती का शीप हूँ मै।
जगत् का जीव हूँ मैं.
हृदय से सजीव हूँ मैं।
हिन्दी का गर्व हूँ मैं,
काव्य में सर्व हूँ मैं।
कवि का भक्त हूँ मैं,
भव अभिव्यक्त हूँ मैं।
लहर सागर की हूँ मैं.
कल्पना सबकी हूँ मैं।
जग हेतु मंगल हूँ मैं,
भवसुख साहिल हूँ मैं।

लोक कल्याण हूँ मैं,
आत्म प्रमाण हूँ मैं।
आदर्श प्रेरणा हूँ मैं,
मानव धारणा हूँ मैं।
केन्द्र बिन्दु मुख्य हूँ मैं,
संकल्प असंख्य हूँ मैं।
जग सार्थक प्रयास हूँ मैं,
बन्धुत्व का विश्वास हूँ मैं।
शंका मिथक से दूर हूँ मैं,
आनन्द से भरपूर हूँ मैं।
लोकेशकुमार सिंह हूँ मैं,
साहिल हिन्दसागर हूँ मैं।

किशनलाल जांगिड़ जोधपुर

नयी सुबह **सन्देश**

नयी सुबह नव सन्देश कहत ।
नभ अरुण आभा अनन्त।
आदित्य आलोक तम हरत।
लालित्य पूर्ण जलद रजत।
नृत्य सागर की सुनहरे लहरें।
अनन्तसिन्धु सतह भाव गहरे।
धरा गगन मध्य रवि देत पहरे।
अदृश्य शक्ति अद्भुत रंग घनेरे।
भौर वेला सारस भरे उड़ान।
सुदूर स्वर्णिम शुभ्र आसमान।
खजूर खंजन पक्षी गतिमान।
प्रकृति का यह शुभ आह्वान।
एक पल अम्बर शंख सा लगता।
नाविक अपनी नोका से जगता।
उजाला होता जब सूरज उगता।
मानो दिनेश किरणजाल बुनता।
सब अन्धियारा धीरे धीरे हरता।
जगत् स्वामी नित प्राण भरता।
रवि सुधा संजीवनी ही अमरता
वही जग पुरुषार्थ प्रेरित करता।
विश्व सचेतन है आज जगकर।
प्रभाती परमार्थ मन्त्र दिनकर।
बढ़े हैं पथ कर्मयोगी सजकर।
भुवन मंगल यज्ञ करें निजकर।

किशनलाल जांगिड़ जोधपुर

"सावन"

बादल कुछ ऐसे बरस रहा है।
मानो ये अम्बर पिघल रहा है।
खुशीयों का पता बता रहा है।
प्रेम है कितना जता रहा है।
ठंडी-ठंडी चली पुरवाई है।
मयूर ने भी पाँखें फैलाई है।
कोयल ने फिर कूक सुनाई है।
काली घटा भी घिर कर छाई है।

हरियाली अब बिखर गई है।
प्रकृति और भी निखर गई है।
फूलों से बगिया भर गई है।
चंचल बूँदे चित्त हर गई है।
बचपन की हुई मौज बड़ी है।
मस्ती करने को फौज खड़ी है।
कागज की कश्ती लहर चढ़ी है।
प्रफुल्लित करती यह घड़ी है।
बारिश की बूंदे आस जगाती है।
वसुंधरा की प्यास बुझाती है।
आसमान से नव अमृत बरसाती है।
सावन की ऋतु है मन हर्षाती है।

"राम" सुथार जोधपुर ©

आम्र तरुओं में नूतन पात आए ।
भेंट करने मंजरी नव साथ लाए ।

कोयलों के कंठ मीठे राग गाएं ।
प्रफुल्लित मन मयूरी मुस्कराएं ।

प्रकृति वधु पहने परिधान नूतन ।
पुष्प भी करने मिलकर परागण ।

तितलियाँ करने लगीं फूलों पर नर्तन ।
स्मितवदन हर पुष्प का लेतीं है चुंबन ।

गुनगुनाते हैं भ्रमर मकरंद पीने ।
कर्णपुट में गीत गाते नित नवीने।

प्रफुल्लित तरुणाई यौवन से मिली है ।
मनभावन सुहावन पवन बासंती चली है ।

शीलचन्द्र जैन 'शील'
ललितपुर ,उ0 प्र0 (भारत)

अधरों पर मुस्कान खिली

खुशियाँ छाईं घर आँगन में
बिटिया मेरी जान मिली।
मस्त मयूरा हो मन नाचे
अधरों पर मुस्कान खिली।।
शोभा है ये मेरे घर की
पिता का ये अरमान है।
मेरी प्यारी बिटिया रानी
यही तो घर की शान है।।
घर आँगन में चहल-पहल है
बजे बधाई गली- गली।
मस्त मयूरा हो मन नाचे
अधरों पर मुस्कान खिली।।
जब से बिटिया घर में आई
गूँज उठी है किलकारी।
इसे देखकर ऐसा लगता
यही है पूँजी हमारी।।
मोहक लगे तोतली बोली
जैसे हो मिश्री की डली।
मस्त मयूरा हो मन नाचे
अधरों पर मुस्कान खिली।।
हो जाएगी बड़ी सयानी
आएँगे दूल्हे राजा।
घर में होंगे मंगलाचार
जब बजें सगुन के बाजा।।
माँ बाबुल के छलकें आँसू
बेटी जब ससुराल चली।
मस्त मयूरा हो मन नाचे
अधरों पर मुस्कान खिली।।

प्रमोद दाहिया

तुम आ गए हो पास
मुझको ऐसा लगा होगा
तन्हाइयों में चाद ने
छू लिया होगा
दे रहे थे तुम आवाज
मुझको ऐसा लगा होगा
वो हवायें थी शायद
जिन्होंने दरवाजे को
छुआ होगा
स्पर्श के आभास का
जागते एहसास का
कोई खोया हुआ
पल होगा
या भोर का कोई
सच्चा सपना होगा
तुम आ गये हो पास
मुझको ऐसा लगा होगा
मोगरे के फूल का गजरा
बासन्ती सुगंध सा संवरा
अपने हाथों से
बिस्तरों पर बिखरा
उधार मांग कर
सांसों को
सांसों से भरा होगा
तुम आ गये हो पास
मुझको ऐसा लगा होगा

- शोभा टण्डन

विश्व पर्यटन दिवस

विश्व की क्या बात करूँ?
मेरा भारत देश अनोखा
एक बार जो आ जाएं यहाँ
वो भारत के ही गुण गाता

भारत माँ का मस्तक
पर्वत माला से श्रृंगारित
चरण पखारता इसके
कन्याकुमारी में महासागर

अरूणाचल में अरूण देव की
प्रथम किरण जो पड़ती
सारी सृष्टि सुरजमुखी सी
बन कर खिल है जाती

देव तुल्य धरा हमारी
संस्कृति, सभ्यता की पहचान
पत्थरों को जहाँ पूजा जाता
वो है भारत देश महान

जो कई ओर ना देखा जाता
देख ताजमहल, दिलवाड़ा की सुंदरता
भारतवासी होने पर मन गर्वाता

राजस्थान की शान निराली
वीर सपूतों की धरोहर हमारी
खान -पान की अनूठी शैली
बातों में तो मिसरी रहती

प्राकृतिक आयुर्वेदिक उपचार
केरल की इससे पहचान
देख वहाँ की नौका दौड़
आंखें खुली की खुली रह जाती

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर
अनूठा है इसका इतिहास
हरी-भरी पंजाब की धरती
ढोल, भांगड़ा से झूम उठती

अनेकता में एकता लिए
सभी भाषाओं को मान दिएं
सर्व धर्म सम्मान किए
हर मौसम, त्योहार की बहार लिए!

"निर्मल, पावन है भारत भूमि
सभी पर्यटकों का स्वागत करती
भारत भूमि"

"शमा जैन सिंघल"

आदमी को पढ़ लो अगर
किताबों की जरूरत नहीं है
ये रास्ता यूँ ही कट जायेगा
किसी हम सफर की जरूरत नहीं है

गांठ की शूल पर टिके रिश्ते
स्वार्थ के परवान फिर चकटते रिश्ते
गले लगकर जो रोया करते थे
आंसुओ की मज़ार बन गये कब के

बोझ जिंदगी को मत समझो
फूल बनके किसी बगिया में महको
गर सुकून मिल जाए
यूँ इस तरह
फिर किसी सज़दे की जरूरत नहीं है
आदमी को पढ़ लो अगर
किताबों की जरूरत नहीं है

चांद भी तो अकेले चला करता है
सितारों का दम नही भरता है
सूरज भी अकेले रोज जला करता है
आना जाना अकेले ही है हमको

जिंदगी काटने की चाह कर लो
ये सबक अपने ज़ेहन में भर लो
पढ़ सको तो आदमी को पढ़ लो
फिर किताबों की जरूरत नहीं है

शोभा टण्डन... जोधपुर
🙏

तिरंगा

आओ तिरंगा लहराये,
आज तिरंगा फहराये।
गणतन्त्र दिवस का पर्व है,
चलो मिलकर खुशियाँ मनाये।
तीन रंग में बना है निर्मल,
देश का गर्व बढाता है।
भारतीय जनमानस में,
देशप्रेम की हिलोरें भरता है।
केसरिया रंग शौर्य लाता,
श्वेत शांति प्रतीक है।
हरियाली है हरित रंग,
देश की समृद्धि दर्शाता है।
गम हों या हो खुशियाँ,
मूक बना सब सहता है।
मुदमंगल में ऊँचे लहराता,
गम में ये झुक जाता है।
मेरे देश का गर्व तिरंगा है,
खुशियों की पावन गंगा है।
झूम ,झूम लहराता है,
आजादी की गौरव गाथा है।
खेल खिलाडी जीते यदि,
विदेशों में धूम मचाता है।
उमंगित जब चले खिलाडी,
हाथों में ये लहराता है।
आन, बान,जान तिरंगा है,
भारत का अरमान तिरंगा है।
स्वाभिमान का गान तिरंगा है,
मातृभूमि की पहचान तिरंगा है।
आओ इसको नमन करें,
सदा इसका सम्मान करें।
झंडा ऊँचा रहे हमारा,
प्रार्थना में गुणगान करें।
सीमा गर्ग मंजरी मेरठ कैंट उत्तर प्रदेश
सर्वाधिकार सुरक्षित ©®

राष्ट्रीयपर्व पन्द्रह अगस्त

राष्ट्रीयपर्व पन्द्रह अगस्त की शुभकामनाएँ
आओ हम आजादी उत्सव उमंग से मनाएँ
अनाम अगणित बलिदानियों के गुण गाएँ
पचहत्तर वाँ स्वतंत्रता दिवस भारतवर्ष का
स्वर्णिमपल है स्वराष्ट्र गौरव वैभव हर्ष का
मान मन में हिमालय से ऊँचा है तिरंगे का
केसरिया त्याग तप की गाथा सदा कहता
धवल रंग वसुधा को शान्ति सन्देश देता।
मध्यचक्र निरन्तर उन्नति प्रेरणा जग देता।
हरारंग हरियालीसमृद्धि जीवनरस भरता।
नीलगगन में लहराता नितराष्ट्र स्वाभिमान
विश्वपटल पर करता लोकतंत्र का आह्वान।
सभ्यतासंस्कृति संसारभर में श्रेष्ठ पहचान।
गर्व करता रहेगा हरहिन्दुस्तानी हिन्दुस्तान।
हमारा भारत देश विश्व में सबसे है महान्।
वन्देमातरम् प्रथम क्रांति पावन राष्ट्र गान।
बंकिमचंद्र चटर्जी आनन्द मठ राष्ट्र शंखनाद।
गुरुदेव रवीन्द्र टैगोर जन गन मन राष्ट्र गीत नाद।
मुक्त पवन मुक्त गगन हौसलों से हुए हैं आजाद।

विरचित किशनलाल जांगिड़

"...परमार्थ"

आलोकित कर रवि जग को,
कहाँ कभी कुछ लेता है?
सरवर में खिलता है नीरज,
और सबको सौरभ देता है।

घिरा है काँटों से फिर भी,
गुलाब सदा मुस्काता है।
बन कर उपवन की शोभा,
वह वातावरण महकाता है।

कालिमा हटा अज्ञान की,
गुरु प्रश्नों के हल देता है।
साथी बन निर्बल का प्रभु,
बल अतुलित भर देता है।

वृक्ष भी क्षुधा मिटाने को,
मीठे स्वादिष्ट फल देता है।
कर अस्तित्वहीन स्वयं को,
सघन जलद जल देता है।

पंथी की प्यास बुझाने को,
सरिता-जल भी बहता है।
असली पूँजी है परमार्थ,
परम ज्ञान यह कहता है।

जीव मात्र को कष्ट न हो,
पीड़ा स्वयं सह लेता है।
साधू प्रतिमूर्ती त्याग की
हर अभाव में रह लेता है।

अहम त्याग कर   महावीर
जब भूमि तक झुक लेता है।
सदा सनातन सत्य वचन है,
कि परहित ही सुख देता है।

"राम" सुथार
जोधपुर

मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए

मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
वापस वतन की शान चाहिए
भौतिकता का तम है फैला,
उजले कपड़े दिल है मैला,
पहन सादगी का जामा अब,
जन-जन में ईमान चाहिए..
मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
वापस वतन की शान चाहिए
जो तन को धन को है खोता,
हरता प्राण कुटुंब है रोता,
देशोन्नति में जो रोढे उन,
व्यसनों का बलिदान चाहिए..
मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
वापस वतन की शान चाहिए
जो आपस में समरस भरता,
रंग-जाति का भेद न करता,
दिल और जान देश को अर्पित,
इस मिट्टी का सम्मान चाहिए..
मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
वापस वतन की शान चाहिए
न्याय नीति को सब ही पालें,
राजा प्रजा और रखवाले,
हिंसा,स्वार्थ जहाँ न पनपे,
अभिशापों में वरदान चाहिए..
मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
वापस वतन की शान चाहिए
मुझे वो हिंदुस्तान चाहिए
जय हिंद *जय भारत
ज्ञाता सिंघई (सिवनी)

*भारतीय संस्कृति अद्भुत *

गीता और वेदों से अलंकृत,
भारत देश हमारा प्यारा,
योग प्राणायाम का दे संदेश,
जीवन करता स्वस्थ व न्यारा....
वैभवमयी प्रखर मुखमंडल,
तेज, तप और दिव्यता,
भारत माँ की संस्कृति अद्भुत,
नही है कोई तुल्यता.....
'अतिथि देवो भव'का मंत्र हमारा,
वसुधैव कुटुम्बकम बनी शिष्टता,
Shake hand से दूर ही रहकर,
नमस्ते की अपनायी नम्रता....
सूर्य-चन्द्र भी पूजे जाते,
है पूज्य नदियों की निर्मलता,
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण,
अनेकता में एकता.....
सारे विश्व में नही मिलेंगे,
प्राणतत्व है पर्व अपार,
कभी सजाते दीप पंक्तियाँ,
रंगों की कभी भरमार....
माँ भवानी के चरणों में,
नर्तन करते नर और नार,
दही हाँड़ी रचते बालक,
कन्हैया का धर श्रृंगार......
ज्योतिर्लिंग के दर्शन करलो,
चार धाम मुक्ति के द्वार,
ईद पर मीठी खीर है बनती,
क्रिसमस पर बँटते उपहार....
पाश्चात्य सभ्यता ना हो हावी,
करें जीवनमूल्यों का संचार,
नही बंटे हम धर्म प्रांत में,
कोटि-कोटि करे सत्कार....
भारतवर्ष का, कोटि-कोटि करे सत्कार.

डॉ. सूरज माहेश्वरी जोधपुर

कह रहें हैं श्री कृष्ण अपनी राधा से

शोर मत करना प्रिय
मेरे पास आने से
राधा देखती है
कृष्ण को कनखियों से
मचा दूं शोर
तो क्या करोगे वासुदेव
जानती हूँ तुमको
कान्हा लड़क्कपन से
वृन्दावन के बगीचों से
गालों पे लगे मक्खन से
यशोदा को चिढ़ाते
मथुरा में गैय्यों को दुलारते
मैनें पकड़ा था
तुम्हें मटकियां फुड़वाते
अरे हाँ... कृष्ण बोले
राधा तुम भी तो बस गयीं थीं
मन में
वृंदावन में, मथुरा की गलियों में
आज भी मै तो सिर्फ
देखने आया था तुम्हें
तुम भी तो याद करती हो मुझे
राधा बोली, कान्हा हमसे मत करो ठिठोली
नाथ तुमसे क्या छिपा है संसार में
पूरा जग डूबा है, तुम्हारे प्यार में
अर्जुन के लाडले, द्रौपदी के रखवाले
बड़ी बड़ी आंखों, घुंघराले बालों वाले
बांसुरी की धुन पे सबको नचाने वाले
गैय्यों को दुलारते, तुम गैय्यों के ग्वाले

पूजती है तुम्हें ये सारी दुनियाँ
गीता की कसम आज भी
खाती है दुनियाँ
कर्म से प्रेरित, तुम्हारे ज्ञान से
प्रेरित है दुनियाँ
कल की चिंताओं से दूर
रहती है दुनियाँ
सच है राधे
नारी ही सृष्टि है
अपने आप में
बड़ा संसार है
नेह के दर्शन बिना
सूना ये संसार है
मैं सबके ह्रदय में रहता हूँ
और तुम्हीं तो मेरा ह्रदय हो, राधे
तुममें समाने तुम्हारे पास आया हूँ
जग जानता है राधा पहले है
मै बाद में हूँ
राधा कृष्ण हूँ
सबका विश्वास हूँ
जय श्री राधे कृष्णा
स्वरचित
शोभा टण्डन.. जोधपुर

डा हरिवंश राय बच्चन -एक नज़र

हालावाद के प्रखर प्रवर्तक, प्रगतिवाद के प्रमुख स्तंभ ,हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में हुई ।केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की ।राज्य सभा के मनोनीत सदस्य व विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे।

विभिन्न विधाओं में अमूल्य कृतियाँ देकर, हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया ।मधुशाला ,मधुबाला मघुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत आदि प्रमुख काव्य संग्रह है ।नये पुराने झरोखे निबंध संग्रह है ।क्या भूलूँ क्या याद करूँ आत्मकथा (४भाग) कवियों में सौम्य संत आलोचनात्मक कृति है ।कई कहानियाँ लिखी व शेक्सपियर नाटकों के सफल अनुवाद किये।विशेष ख्याति कवि के रूप में मिली ।

सतरंगिनी में संकलित कविता जुगनू कवि की आस्था को व्यक्त करती है ।मधुशाला अनुपम काव्य संग्रह है ।हाला का अप्रतिम संरचना अद्भुत है ।कभी बच्चन जी ने मदिरा पान नहीं किया । मधुशाला का इतना सजीव चित्रण अविस्मरणीय है ।

कविताओं की भाव अभिव्यक्ति अत्यंत व्यापक व विवीघापूर्ण है ।यौवन और प्रणय पर उन्मुक्त अभिव्यक्ति है ।ख़ैयाम की रुबाइयों का प्रभाव दिखता है ।रहस्य वाद का अद्भुत व अनूठा संगम दिखता है ।समाजिक चेतना व जीवन दर्शन मुखरित होता है ।भूखा बंगाल , खादी के फूल में प्रभावशाली चित्रण है ।

खड़ीबोली भाषा सरल सहज व प्रवाहमयी है उत्कृष्ट रस योजना है ।अलंकार की उपस्थिति सौन्दर्य से परिपूर्ण है ।चित्रात्मकता व लयात्मकता की दृष्टि से रचनाएँ अनुठी हैं ।

चौंसठ रूसी कविताएँ पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से नवाज़ा गया ।अमूल्य साहित्य सेवा के लिए पद्मभूषण से अलंकृत किया गया ।

मधुकलश मधुशाला मधुबाला।
मूल मर्म समझे कोई मतिवाला।
मधुवसन्त मधु शहद नहीं हाला।
बच्चन काव्य कृति सुधा प्याला।
हरपल पितामह प्रतापनारायण।
रामचरित मानस अनेक परायण।
संतति हेतु हरिवंश पुराण पठन।
बच्चन उपनाम है बेचन कारण।
जनक श्रीवास्तव सरस्वतीनन्दन।
संगिनी श्यामा एवं तेजी बच्चन।
श्रीअजिताभ अमिताभ पुत्ररत्न।
साहित्य साधना सार्थक प्रयत्न।
श्रीहरिवंशराय बच्चन महाकवि।
आत्मविश्वास उजाला सम रवि।
संघर्षशील प्रेरणा पुरुषार्थ छवि।
राष्ट्रचेतना राष्ट्रसाधना राष्ट्रकवि।
हर शब्द अमृत सा देता जीवन।
भीषण गर्मी अनुभूति है सावन।
दुःखी मिले सुख लक्ष्य पावन।
कृति घोलें रस अकिंचनजीवन।
रिश्ता नाते रखना सीखते सब।
अग्निपथ कत्तर्व्यपथ भव अब।
साहस वीरता गीत सजता लब।
कलमवीर कर्मयोगी काव्य रब।
वरदान "पूर्व चलने के बटोही"
प्रेरणामयी ऊर्जा देतें जगराही।
भावशिल्प से मुद्रित मनश्याही।
कीर्तिमान हर रचना को सराही।
शंख नाद स्वदेशी *सूतमाला* ।
प्रेरणा पिपीलिका जीतवाली।
मन से हारे हिम्मत देने वाली।
अनवरत पुरुषार्थ शक्तिशाली।
तेरा हार कविवर प्रथम कृति।
प्रकृति अनुराग की अनुकृति।
मधुशाला रूबाइयाँ लय छन्द।
सूफी दर्शन की सहज प्रवृत्ति।

आत्म परिचय जग नवीनबोध।
विश्व मंगल हेतु शुभ अनुरोध।
झूठ कपट स्वार्थ खूब विरोध।
शाश्वत सत्य मुख्य भाव बोध।
निशा निमंत्रण गज़ब आह्वान।
भीषण प्रतिकूलता प्रणयगान।
घोर निराशा में मन आशावान।
प्रलय में भी अटल स्वाभिमान।
एकांत संगीत दिव्य मधुरस्मृति।
निर्विघ्न गतिमान है समय गति।
शोक निराश जनजीवन में यति।
शून्य जड़ता लक्ष्य हीन है मति।
आकुल अन्तर दुःख कालान्तर।
सर्वसुखद हो मनुष्य समानान्तर।
काव्यदर्पण कवि बच्चन अन्तर।
मानवता की पूजा हो प्रकारान्तर।
श्रेष्ठकविता है भुवन *सतरंगिनी* ।
साहित्य हिमगिरि शुभ्र तरंगिनी।
अमर आनन्द कर्णप्रिय रागिनी।
चन्द्र ज्योत्स्ना उजाला यामिनी।
खादी के फूल जग सबसे प्यारें।
हम सब लगाते स्वदेशी के नारे।
चलते सत्य अहिंसा पथ पे सारे।
गाँधी सुभाष पटेल नेहरू न्यारे।
दो चट्टानें भव मानव अभिशाप।
बहुत दिन बीतें बसते दिल आप।
मिलनयामिनी प्रणयपत्रिका छाप।
त्रिभंगिमा जाल समेटा कविताप।
क्या भूलूँ क्या याद करूँ कथा।
नीड़ का निर्माण फिर निजव्यथा।
बसेरे से दूर जगयात्रा की कथा।
दशद्वार से सोपान तक है यथा।
(भाव साम्य)   किशनलाल जांगिड

श्रीमती प्रभा लोढा आलेख

दुष्यंत कुमार परदेशी

दुष्यंत कुमार जी का जन्म 1सितम्बर1933 में बिजनोर जनपद उतर प्रदेश के ग्राम राजपुर नबादा में हुआ था।
इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर कुछ दिन आकाशवाणी भोपाल में असिस्टेंट प्रोड्यूसर के पद पर विद्यमान रहे।
इलाहाबाद में कमलेश्वर मार्कंडेय दुष्यन्त के अत्यधिक प्रिय मित्र थे बाद में वह समाधी भी बने।
दुष्यंत कुमार *परदेशी* के नाम से लेखन कार्य किया।
जिस समय उन्होंने साहित्य की दुनिया में अपना कदम रखा ,तब प्रगतिशील शायर ताज भोपाली और कैब भोपाली का नाम विख्यात था।
हिन्दी साहित्य में अज्ञेय और गजानन माधव मुक्ति उत्कृष्ट कोटी के लेखन में मशहूर थे।
आम समाज के लिए नागार्जुन और धूमिल जी को सरल सहज भाषा में लेखन के लिए पहचाना जाता था।
42 बर्ष की उम्र में ही दुष्यंत कुमार परदेशी जी ने साहित्य सृजन में अपार ख्याति प्राप्त की।
उनकी रचनाएं --

एक काण्ड, विश्व पाई, सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, बसन्त, आंगन में एक बृक्ष,छोटे - छोटे सबाल,चलते हुए वन काफी चर्चा में रही।इनकी रचनाओं में छायावाद का प्रभाव दिखाई देता है। तत्सम, तद्भव,देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग व उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा अलंकार का उनूठा प्रयोग है।
कविताएं अधिकांशतः छन्द मुक्त है।

गद्य कविता का किताबों में सृजन साहित्य में अपना योगदान देअमर हो गए।
हरिवंश राय बच्चन और दुष्यंत जी के पिता पक्के मित्र थे।
वोलीबुड में फिल्म दीवार देख अमिताभ बच्चन के फैन बन गए।
और अभिनेता अमिताभ बच्चन की तुलना उस समय के सुपरस्टार शशि कपूर, शत्रुघ्न सिंहा से की।
काबिले तारीफ में दुर्लभ पत्र लिखा जो उनकी पत्नी राजेश्वरी जी ने दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुक संग्रहालय को प्रदान किया।
यहां पर दुष्यंत कुमार परदेशी जी की सभी कृतियां सहेजी गई है।
यह देख कर लगता है कि साहित्य का एक युग अभी भी जीवंत है।
देश व समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सुख -दुख को अपनी रचनाओं में पिरोया और गाया।
उनका सही नाम दुष्यंत कुमार त्यागी जी था।

पर साहित्य जगत में दुष्यंत कुमार परदेशी के नाम से विख्यात हुए।

दुष्यंत कुमार: हिंदी गजल का स्वर, जिन्हें वामपंथी लेखकों ने इसलिए भुला दिया क्योंकि उनमें हिन्दू विरोध न था और साहित्य को सत्ता एवं पुरस्कारों से दूर रहने का भाव था!

मत कहो आकाश में कोहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है!

व्यक्तिगत आलोचना से बचने वाले और हर समस्या का हल खोजने को प्रयासरत रहने वाले दुष्यंत कुमार (जन्म: 01 सितम्बर 1933निधन: 30 दिसम्बर 1975) के दिन अल्पायु में साहित्य जगत को सूना कर चले गए थे। यद्यपि इस संसार में उनका प्रवास बहुत अल्प रहा था, परन्तु उतने ही समय में उन्होंने साहित्य को जनता का स्वर बना दिया था। उनकी रचनाओं में तत्कालीन व्यवस्था के प्रति रोष और क्षोभ दिखलाई देता है।

उनकी रचनाओं में सपने टूटने की पीड़ा है। उनकी रचनाओं में उस व्यवस्था के प्रति मोहभंग है, जिसमें उन्होंने आँखें खोली हैं। वह जबरन क्रान्ति लाने में विश्वास नहीं करते। वह जानते हैं कि क्रान्ति को जब आना होगा, तब आएगी। उन्हें पता है कि जब समय के अत्याचारों, अन्याय और शोषण से व्यक्ति स्वयं त्रस्त होगा, तब क्रांति आएगी। वह लिखते हैं:

"सुख नहीं यों खौलने में सुख नहीं कोई ,
पर अभी जागी नहीं वह चेतना सोयी –
वह, समय की प्रतीक्षा में है , जगेगी आप
ज्यों कि लहराती हुई ढकने उठाती भाप ।
अभी तो यह आग जलती रहे , जलती रहें ,
जिंदगी यों ही कडाही में उबलती रहे ।"

दुष्यंत कुमार शासन और लेखकों के मध्य भी एक स्पष्ट सम्बन्ध निर्धारित करते हैं। वह जो कहते हैं, उसे कहने में बड़े बड़े लेखक आज तक लजाते हैं, वह सोच के स्तर पर इतने परिपक्व हैं और स्पष्ट हैं कि आज के तमाम लेखक उनके समान धरातल पर जाकर खड़े नहीं हो पाते हैं। इन दिनों लेखकों और साहित्यकारों को यह लगता है कि सरकार उन्हें नहीं पहचानती या सम्मान नहीं देती तो वह शिकायत करते हैं।

परन्तु वर्ष 1972 में नई दुनिया में प्रकाशित दुष्यंत कुमार का लेख "साहित्य सत्ता की ओर क्यों देखता है" पढने पर यह ज्ञात होता है कि कथित जनवादी लेखकों को यह समस्या तब भी थी। वह लिखते हैं कि यह एक अजीब बात है कि साहित्यकार में शिकवों और शिकायतों का शौक बढ़ता जा रहा है। उसे

शिकायत है कि गवर्नर और मुख्यमंत्री उसे पहचानते नहीं, शासन उसे मान्यता नहीं देता या देता है तो तब जब वह कब्र में पैर लटका कर बैठ जाता है। लेकिन समझ नहीं आता कि लेखक के लिए यह जरूरी क्यों है कि वह उन बातों को महत्व दे! आखिर शासन ने तो उससे नहीं कहा था कि वह लेखक बने। वह अपनी अदम्य संवेदनशीलता के कारण लेखक बनता है, अभिव्यक्ति की दुर्निवार पीड़ा उसे कलम उठाने के लिए विवश करती है। इस प्रक्रिया में शासन या समाज कहाँ बीच में आता है?”

दुष्यंत यहीं नहीं रुकते हैं, वह लेखन और शासन को अलग रखने के लिए तर्क देते हैं। वह कहते हैं कि शासन से मान्यता का अर्थ है शासन से समझौता, और समझौता हमेशा अकादमी को कहीं न कहीं कमजोर करता है, और यह विरोधाभास ही तो है कि आप जिस शासन की आलोचना करें, उसी की स्वीकृति और मान्यता के लिए तरसें!

उन्होंने लेखकों को विशेषाधिकार का भी विरोध किया था क्योंकि उनके अनुसार लेखक को अपनी स्वतंत्रता में बाधक होने वाले हर अहसान से बचना चाहिए। वह इस बात से बहुत दुखी थे कि लेखक आखिर सत्ता के आसपास क्यों घुमते हैं? उन्होंने इस लेख में लेखक संघों की राजनीति की भी आलोचना की थी।

एक और बात उन्होंने लेखकों के लिए कही थी और वह अभी तक हिंदी के साहित्य जगत के लिए सटीक बैठती है। उन्होंने लिखा था कि “दरअसल बात यह है कि लेखक किसी दूसरे लेखक को भौतिक दृष्टि से जरा सी भी संपन्न स्थिति में नहीं देख सकता।” और उन्होंने हिंदी लेखकों के दोमुंहेपन पर बात करते हुए कहा था कि “वह अर्थात हिंदी का लेखक) एक साँस में विरोध करता है और दूसरी में समर्पण! एक तरफ वह शासन को कोसता है और उनकी उपेक्षा का हवाला करता है और फिर दूसरे प्रदेशों का हवाला देकर यह सिद्ध करना चाहता है कि वहां नेता साहित्यकारों का आदर करते हैं।”

दुष्यंत कुमार ने हिंदी वामपंथी लेखकों की सच्चाई जो उस समय बताई थी, वह इस समय भी वही है। आज भी उन्हें भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार को कोसना है और उससे हर समिति में स्थान, फेलोशिप और सम्मान, पुरस्कार भी पाने हैं।

सरकार को कोसने वाले और हिन्दुओं को कोसने वाले लेखक भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से सम्मान और पुरस्कार लेते देखे गए हैं। वामपंथी लेखकों का लेखकीय ईमान धन राशि या सम्मान देखते ही डोल जाता है।

बहरहाल बात दुष्यंत की! दुष्यंत को आन्दोलनों का शायर कहा जाता है, वह लिखते हैं

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए

पर आज के आंदोलनों से दुष्यंत गायब हैं

दुष्यंत की रचनाओं में जो आक्रोश है, वह किसी भी सरकार विरोधी आन्दोलन के प्राण हो सकता है, परन्तु वह हाल ही में हुए आन्दोलनों से नदारद दिखे! ऐसा क्यों है कि जिन दुष्यंत ने अपनी सरकारी नौकरी की परवाह न करते हुए आपातकाल में कविता लिख डाली थी

एक गुड़िया की कई कठपुतलियों में जान है,
आज शायर यह तमाशा देखकर हैरान है
ख़ास सड़कें बंद हैं तब से मरम्मत के लिए
यह हमारे वक़्त की सबसे सही पहचान है
एक बूढ़ा आदमी है मुल्क़ में या यों कहो—
इस अँधेरी कोठरी में एक रौशनदान है

उनकी किसी कविता को इन सरकार विरोधी आन्दोलनों में नहीं लिया गया?

क्या इसलिए क्योंकि दुष्यंत ने विभाजनकारी कविताएँ नहीं लिखीं? उनका असंतोष भारत के लिए था, उनका क्षोभ एक बेहतर भविष्य के लिए था और समाधान खोजते थे, वह लिखते थे कि

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

जबकि अभी के जो लेखक हैं, वह हंगामा तो खड़ा करते हैं, पर सूरत बदलने पर उनका जोर नहीं है! दुष्यंत हिन्दुओं को गाली नहीं देते हैं, वह सत्ता पर निशाना साधते हैं, इसलिए हिंदी गजल को धारदार पहचान देने वाले दुष्यंत साहित्यिक परिदृश्य से गायब कर दिए गए हैं और उनके स्थान पर फैज़ आ गए हैं, जो बुत गिरवाने के बहाने हिन्दू धर्म पर निशाना साधते हैं और जिनका विरोध सत्ता से न होकर हिन्दू धर्म से है!हिंदी गजल में दुष्यंत का स्थान वही है जो उर्दू में ग़ालिब या किसी और का हो सकता है! परन्तु हिंदी साहित्य दुष्यंत को भुला बैठे हैं, क्योंकि उन्होंने एजेंडा नहीं चलाया, साहित्यकारों को सत्ता से अलग रहने के लिए कहा!

42 बर्ष की अल्पायु में 30 दिसम्बर 1975 को यह साहित्य जगत का सितारा हमेशा के लिए अलविदा कह गया।

साहित्य जगत का यह दीपक, अपनी साहित्य सृजन से, युगों युगों तक साहित्य प्रेमियों के जीवन में प्रज्वलित रहेगा।

विभा जैन (ओज्स) इंदौर (मध्यप्रदेश)

भारतीय संस्कृति   सत्यनारायण तिवारी 'सत्य'

शुभ भारतीय परम्परा और संस्कृति को है नमन ।
देवों से भी पावन जहां माता पिता गुरु के चरण ।
नदियों के सुन्दर तीर हैं , निर्मल सुधासम नीर है
जल है तो जीवन सर्वदा , पर्यावरण का सन्तुलन   शुभ भारतीय---------
गंगा हो जमुना हो नर्मदा , कावेरी , कृष्णा , बेतवा
मां तुल्य हैं सरिता सभी , स्नान , पूजन , आचमन   शुभ भारतीय----------
गौमाता की सेवा जहां , गौ कामधेनु स्वरूप है
गौ क्षीर देती अमृतसम , चरती धरा के हरित तृण   शुभ भारतीय----------
अपनाया जग ने योग का विज्ञान भारतवर्ष से
रहे योग प्राणायाम से , नीरोग तन , नीरोग मन   शुभ भारतीय----------
है परोपकार की भावना , सब हों सुखी, यह प्रार्थना
मानव हों मानव की तरह , करते सदा चिन्तन,मनन शुभ भारतीय----------
सुख दुख में रहते हैं एकजुट , परिजन, समाज का नेम यह
ऐसे ही राष्ट्र की आपदा विपदा में रहते हैं एक मन   शुभ भारतीय----------
उत्सव हैं,मेले, त्यौहार हैं जहां राग, रंग की बहार है
स्वादिष्ट व्यंजन हैं देश के , शुचि संस्कारित आचरण   शुभ भारतीय----------
सत्संग वेद पुराण का , भागवत का , मानस गान का
सन्तों की वाणी मधु सरिस , प्रभुनाम संकीर्तन , भजन
है 'सत्य', शिव, सुन्दर का दर्शन प्रकृति के सान्निध्य में
कण कण में है ईश्वर जहां स्वर्णिम धरा , नीलम गगन शुभ भारतीय------

सत्यनारायण तिवारी 'सत्य'   टीकमगढ़ (म प्र)

हिंदी साहित्य का विशिष्ट व्यक्तित्व - महादेवी वर्मा

डॉक्टर प्रोफेसर - मंजरी गुरु

महादेवी वर्मा का जीवन परिचय |

हिंदी साहित्य में आधुनिक मीरा के नाम से प्रसिद्ध कवयित्री एवं लेखिका महादेवी वर्मा का जन्म वर्ष 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद शहर में हुआ था। इनके पिता गोविंदसहाय वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। माता हेमरानी साधारण कवयित्री थीं एवं श्री कृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थीं। इनके नाना जी को भी ब्रज भाषा में कविता करने की रुचि थी। नाना एवं माता के गुणों का महादेवी पर गहरा प्रभाव पड़ा। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई थी। नौ वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ, किंतु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया, ऐसी विकट स्थिति में भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा।

अत्यधिक परिश्रम के फल स्वरुप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम.ए. तक की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वर्ष 1933 में इन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्या पद को सुशोभित किया। इन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयास किया साथ ही नारी की स्वतंत्रता के लिए ये सदैव संघर्ष करती रही। इनके जीवन पर महात्मा गांधी का तथा कला साहित्य साधना पर रविंद्र नाथ टैगोर का प्रभाव पड़ा।

शिक्षा - छठी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत ही 9 वर्ष बाल्यावस्था में ही महादेवी वर्मा का विवाह डॉक्टर स्वरूप नारायण वर्मा के साथ कर दिया गया। इससे उनकी शिक्षा का क्रम टूट गया क्योंकि महादेवी के ससुर लड़कियों से शिक्षा प्राप्त करने के पक्ष में नहीं थे। लेकिन जब महादेवी के ससुर का स्वर्गवास हो गया तो महादेवी जी ने पुनः शिक्षा प्राप्त करना शुरू किया। वर्ष 19-20 में महादेवी जी ने प्रयाग से प्रथम श्रेणी में मिडिल पास किया।

(वर्तमान उत्तर प्रदेश का हिस्सा प्रयागराज) संयुक्त प्रांत के विद्यार्थियों में उनका स्थान सर्वप्रथम रहा। इसके फलस्वरूप उन्हें छात्रवृत्ति मिली। 1924 में महादेवी जी ने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की और पुनः प्रांत बार में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस बार भी उन्हें छात्रवृत्ति मिली। वर्ष 1926 में उन्होंने इंटरमीडिएट और वर्ष 1928 में बीए की परीक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में प्राप्त की। व्हाट्सएप 1933 में महादेवी जी ने संस्कृत में मास्टर ऑफ आर्ट एम. ऐ. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस प्रकार उनका विद्यार्थी जीवन बहुत सफल रहा। बी.ऐ.में उनका एक विषय दर्शन भी था । इसलिए उन्होंने भारतीय दर्शन का गंभीर अध्ययन किया इस अध्ययन की छाप उन पर अंत तक बनी रही। महादेवी जी ने अनेक रचनाएं चांद में प्रकाशित हुईं । हिंदी संसार में उनकी उन प्रारंभिक रचनाओं का अच्छा स्वागत हुआ। इससे महादेवी जी को अधिक प्रोत्साहन मिला और फिर से वे नियमित रूप से काव्य साधना की ओर अग्रसर हो गई।

परीक्षा पास करने के पश्चात ही वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य नियुक्त हो गई। उनकी कर्तव्यनिष्ठा में शिक्षा के प्रति लगाव और कार्यकुशलता के कारण ही प्रयाग महिला विद्यापीठ में निरंतर उन्नति की। महादेवी जी वर्ष 1932 में महिलाओं की प्रमुख पत्रिका चांद की संपादक बनी।

महादेवी वर्मा का वैवाहिक जीवन -जब महादेवी वर्मा मात्र 11 वर्ष की थी तभी उनका विवाह डॉक्टर स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया गया था। किंतु विधि को कुछ और ही मंजूर था। महादेवी जी का वैवाहिक जीवन सुख में नहीं रहा। इनका जीवन असीमित आकांक्षाओं और महान आशाओं को प्रति फलित करने वाला था। इसलिए उन्होंने साहित्य सेवा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

साहित्यिक परिचय -

महादेवी जी साहित्य और संगीत के अतिरिक्त चित्रकला में भी रुचि रखती थीं। सर्वप्रथम इनकी रचनाएं चांद नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। ये 'चांद' पत्रिका की संपादिका भी रहीं। इनकी साहित्य साधना के लिए भारत सरकार ने इन्हें पदम भूषण की उपाधि से अलंकृत किया। इन्हें 'सेकसरिया' तथा 'मंगला प्रसाद' पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। वर्ष 1983 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा इन्हें एक लाख रुपए का भारत-भारती पुरस्कार दिया गया तथा इसी वर्ष काव्य ग्रंथ यामा पर इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। ये जीवन पर्यंत प्रयाग में ही रहकर साहित्य साधना करती रहीं। आधुनिक काव्य के साथ साज-श्रृंगार में इनका अविस्मरणीय योगदान है। इनके काव्य में उपस्थित विरह-वेदना अपनी भावनात्मक गहनता के लिए अमूल्य मानी जाती है। इसी कारण इन्हें आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। करुणा और भावुकता इनके काव्य की पहचान है। 11 सितंबर, 1987 को यह महान कवयित्री पंचतत्व में विलीन हो गई।

भाषा शैली -महादेवी जी ने अपने गीतों में स्निग्ध और सरल, तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, श्लेष, मानवीकरण आदि अलंकारों की छटा देखने को मिलती है। इन्होंने भावात्मक शैली का प्रयोग किया, जो सांकेतिक एवं लाक्षणिक है। इनकी शैली में लाक्षणिक प्रयोग एवं व्यंजना के प्रयोग के कारण अस्पष्टता व दुरुहता दिखाई देती है।

काव्य भाव –

इनकी रचना का केंद्र बिंदु वेदना रही । आप छायावादी रचनाकार हैं।

आप हिंदी भाषा की सुविख्यात कवियित्री का स्वतंत्रता सेनानी और महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाली महिला रहीं है। और आपके लेखन में यह साफ़ दिखाई देता है।

काव्य साधना -

महादेवी वर्मा छायावादी युग की प्रसिद्ध कवित्री हैं।

इनकी रचनाओं में अनुभूति और सौंदर्य चेतना की अभिव्यक्ति को प्रमुख स्थान दिया है। महादेवी जी के काव्य में यह दोनों विशेषताएं हैं।

अंतर मात्र इतना है कि जहां छायावाद के अन्य कवियों ने प्रकृति में उल्लास का अनुभव किया है वहीं इसके उलट महादेवी जी ने वेदना का अनुभव किया है। महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में कल्पना के आधार पर प्रकृति का मानवीकरण कर उसे एक विशेष भाव स्मृति और गीत काव्य से विभूषित किया है ।

हिंदी साहित्य में स्थान -

महादेवी जी की कविताओं में नारी हृदय की कोमलता और सरलता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। इनकी कविताएं संगीत की मधुरता से परिपूर्ण हैं। इनकी कविताओं में एकाकीपन की भी झलक देखने को मिलती है। हिंदी साहित्य में पद्य लेखन के साथ-साथ अपने गद्य लेखन द्वारा हिंदी भाषा को सजाने-संवारने तथा अर्थ- गाम्भीर्य प्रदान करने का जो प्रयत्न इन्होंने किया है, वह प्रशंसा के योग्य है। हिंदी के रहस्यवादी कवियों में इनका स्थान सर्वोपरि है।

कृतियां रचनाएं -

महादेवी जी ने पद्य एवं गद्य दोनों ही विधाओं पर समान अधिकार से अपनी लेखनी चलाई। इनकी कृतियां निम्नलिखित हैं-

1. नीहार - यह महादेवी जी का प्रथम काव्य संग्रह है। उनके इस काव्य में 47 भावात्मक गीत संकलित हैं और वेदना का स्वर मुखर हुआ है।

2. रश्मि - इस काव्य संग्रह में आत्मा-परमात्मा के मधुर संबंधों पर आधारित 35 कविताएं संकलित हैं।

3. नीरजा - इस संकलन में 58 गीत संकलित है, जिनमें से अधिकांश विरह-वेदना से परिपूर्ण है। कुछ गीतों में प्रकृति का मनोरम चित्र अंकित किया गया है।

4. सान्ध्य गीत - 58 गीतों के इस संग्रह में परमात्मा से मिलन का चित्रण किया गया है।

5. दीपशिखा - इसमें रहस्य-भावना प्रधान 51 गीतों को संग्रहित किया गया है।

6. अन्य रचनाएं - अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, श्रृंखला की कड़ियां, पथ के साथी, क्षणदा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, संकल्पिता, मेरा-परिवार, चिंतन के क्षण आदि प्रसिद्ध गद्य रचनाएं हैं, इनके अतिरिक्त-सप्तवर्णा, सन्धिनी, आधुनिक कवि नामक गीतों के समूह प्रकाशित हो चुके हैं।

महादेवी वर्मा को मिले पुरस्कार एवं सम्मान-

महादेवी वर्मा ने वर्ष 1934 में निरजा पर ₹500 का पुरस्कार और सेकसरिया पुरस्कार जीता। वर्ष 1944 में आधुनिक कवि और निहार पर 1200 का मंगला प्रसाद पारितोषिक भी जीता । भाषा साहित्य संगीत और चित्रकला के अतिरिक्त उनकी रूचि दर्शनशास्त्र में भी थी। महादेवी वर्मा को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1956 में पद्म भूषण से तथा वर्ष 1988 में पदम विभूषण से सम्मानित किया गया। हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा उन्हें भारतेंदु पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 1982 में काव्य संकलन यामा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

महादेवी वर्मा को अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। इनको हर क्षेत्र में पुरस्कार मिले।

1. साहित्य अकादमी फेलोशिप (1979) 2. ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982)

3. पद्मभूषण पुरस्कार (1956) 4. पदम विभूषण (1988)

मृत्यु -

महादेवी वर्मा का निधन 11 सितंबर 1987 को प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज) में हुआ। महादेवी वर्मा हिंदी भाषा की एक विख्यात कवित्री थी स्वतंत्रता सेनानी और महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाली महान महिला थी।

****

गोस्वामी तुलसीदास जी के वैशिष्ट्य की विवेचना का सामर्थ्य मुझ में नहीं,उन्हें नमन वंदन करता हुआ अपनी अल्पबुद्धि से जो समझ सका उसे प्रकट करने का दुस्साहस मैं कर रहा हूँ।

गोस्वामी जी ने अवधी भाषा में ही सृजन किया।रामचरितमानस महाकाव्य में उन्होंने विभिन्न क्लिष्ट छंदों में राम कथा को प्रवाह दिया है, उनमें दोहा,चौपाई,सोरठा,छंद आदि प्रमुख है।रचनाओं में सहजता इतनी कि यदि ध्यान से पढ़ा जाए अर्थ स्वतः प्रकट होता रहता है।

यह सब लिखने से पूर्व ही गोस्वामी जी ने लिख दिया कि-"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा" अर्थात मैं मात्र अपने सुख के लिए श्री रघुनाथ जी की कथा लिख रहा हूँ।इससे यह भी संदेश स्पष्ट रहा कि किसी प्रकार की तुलना,विवेचना से उन्हें दूर ही रहना है मात्र अपनी बात प्रकट करनी है।

रामचरित मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्म से एक एक घटना को इतनी गूढ़ता व यथार्थता से लिखा है कि पढ़ते समय प्रतीत होता है कि अभी घटित हो रहा है। गोस्वामी जी की शैली सभी महाकाव्यों में समान रही है।

सादर:-

राम प्रकाश अवस्थी 'रूह'

आभार श्रद्धेय आशीर्वाद।

डॉ.अखिल जी बंसल साहब

पत्रकारिता के महर्षि विलक्षण।
अथाई आशा समूह के प्रवर्तक।
समन्वय वाणी पूज्य संस्थापक
अनन्य भावविवेचक शिल्पकार
खिलता गुलाब छवि सदाबहार
लक्ष्य पावन संकल्प शाकाहार
जीवन रागिनी शैल जी संगिनी
बंसल साहब अद्भुत विचारक।
जैनऋषि आचार्य मत प्रचारक

इस साहित्यिक वृन्द के समस्त

बन्धुओं और बान्धव का साधुवाद।

किशनलाल जांगिड़

आत्मीय साहित्यकारों का आभार।

धन्य नाम सपन साकार की आशा।
स्वप्निल जी भाव शिल्प युग भाषा।
आपकी कविता जीवन परिभाषा।
समसामयिक प्रसंग सरल भाषा।

मालिनी जी पाठक श्रेष्ठ कवयित्री।
छन्दबद्धरचना काव्य जगत नेत्री।।
मानवता की सुरसरिता है कविता।
लिखती हृदय के भाव कथ्यमैत्री।

राम आदर्श राम प्रकाश अनोखा।
बहाते सुखद हवाओं का झोंका।
शब्दमोती पिरोते पा कर मौका।
दिल में रखते भाव लेखा जोखा।

सुषमा जी खरे कल्पना से परे।
दीदी अनुराग से सन्देश है भरे।

शोभा चारू सुन्दर भाव घनेरे।
देती रहती आशीष सुबहसवेरे

किशनलाल जांगिड़

समन्वयवाणी अथाई आशा इन्टरनेशनल साहित्यिक समूह द्वारा
आयोजित सम्मेलन की झलकियाँ विशिष्ट अतिथि एवं डॉ. अखिल जी बंसल के सान्निध्य में
सम्मानित समस्त बन्धु बान्धव ।

न्यास, जयपुर
ान समारोह
धिवेशन
गस्त 2022

अधिवेशन
26 अगस्त 2022

जयपुर

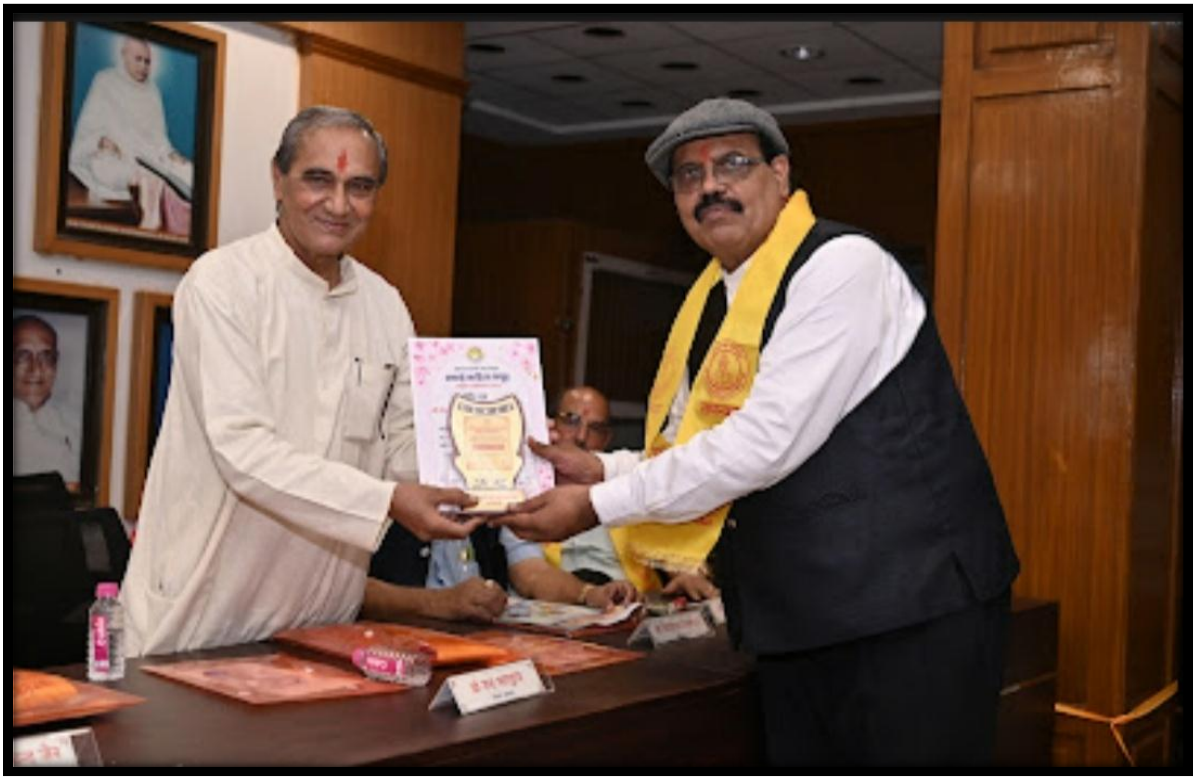

अखिल सेतु के वार्षिक अंक जनवरी 2023 के प्रकाशन एवं लोकार्पण के उपलक्ष्य पर समन्वयवाणी अथाई आशा इन्टरनेशनल समूह के सभी सृजनशील एवं संवेदनशील बन्धुओं और विदुषी नारी शक्ति का अभिवादन,एवं हार्दिक अभिनन्दन, सहयोग के लिए सभी का साधुवाद।आप सभी के अपार सहयोग एवं अनुराग से साहित्यसृजन का पुनीत यज्ञ सम्पन्न हुआ है,जिसके भावों व विचारों की पावन ज्योति से हमारे भारतवर्ष का सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश सदैव आलोकित रहेंगा।भारतीय साहित्यकारों के उच्च आदर्श को आत्मसात करते हुए जीवन पथ पर अग्रेषित होने का संकल्प लेते हैं।मन में इस बात का गौरव है कि हम सब मिलकर अपने प्राचीन साहित्य की श्रेष्ठ परम्पराओं को संरक्षित रखते हुए प्रेरणादायी साहित्य दीप धरोहर के रूप में भावी युवापीढ़ी को प्रदान करेंगे।एक बार पुनः सभी को धन्यवाद, महान् कवि धर्म का पालन करते हुए आनन्द का उपहार मानवता को देते रहेंगे।एक महकता गुनगुनाता,रंग बिरंगे फूलों सी रचनाओं का गुलदस्ता...... आपके हाथों में जो दिल की गहराइयों को छूता हुआ अन्तरमन की आहटबन जायेगा।दिल को खुशियों से भर देगा।नई कोंपलों ,सजीले पोर है,जो बरबस आवको अपने नज़दीक ले आयेंगे,इन्हें छूना,महसूस करना,नये परिंदों सी दस उड़ान में साक्षी बनकर पठन पाठन और लेखन लुप्त होती साँस्कृतिक साधना को ,इस विशाल देश की साहित्यिक जिज्ञासा को फिर से जागृत करने का सूक्ष्म प्रयास है,सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं नववर्ष की शुभकामनाएँ। इस संकलन को पूर्ण रूप से तैयार करने में इसकी खूबसूरती में चार चाँद लगााने में लेखन को नई दिशा देने में उपप्रधान सम्पादक श्री किशनलाल जांगिड जी को श्रेय जाता है।
हम सभी के प्रेरणा के स्रोत परम श्रद्धेय आदरणीय प्रधान सम्पादक डॉ. अखिल बन्सल जी जर्नलिस्ट का बहुत बहुत साधुवाद,हार्दिक आभार आपका आशीर्वाद हम सब पर सदैव बना रहे।इन्हीं शुभकामनाओं के साथ जय हिन्द जय श्रीराम जयजिनेन्द्र सा धन्यवाद एवं आभार सहसम्पादक

:- शोभा टण्डन